thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १४ अंक ४ अप्रैल २०१४

वैदिक विद्वानों, आर्यनेताओं व दानदाताओं की उपस्थिति में
श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम परली (महाराष्ट्र) में
भव्य यज्ञशाला का उद्‌घाटन सुसम्पन्न

thearyasamaj.org

यज्ञशाला उद्घाटन समारोह, परली-वै.

रू.१० लाख की लागत से नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला के उद्घाटन अवसर पर सर्वश्री प्रकाशजी आर्य, डॉ.धर्मेंद्रजी शास्त्री, वेलानी परिवार, राजेंद्र दिवे, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, लोहिया, बसैये आदि ।

नूतन यज्ञशाला में उद्घाटनयज्ञ अवसर पर मंचस्थ विद्वद्गण तथा यजमान दम्पती सर्वश्री राठौर, डॉ.काले, लखमसी वेलानी, लोहिया, प्रकाशजी आर्य ।

डॉ.प्रताप सुग्रीव काले(उपजिलाधीश, लातूर) व काले परिवार की ओर से गुरूकुल में बनें **वरूण जलप्याऊ** के उद्घाटन अवसर पर काले परिवार व विद्वद्गण ।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७१
दयानन्दाब्द १९१ चैत्र १० अप्रैल २०१४

प्रधान सम्पादक
राजेंन्द्र दिवे
(मो.०९८२२३६५२७२)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ०९४२११९५११९०४), प्रो. देवदत्त तुंगार (मो.०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) लहर नरेन्द्र मोदी की (सम्पादकीय)........२
२) श्रुतिसन्देश/ संस्कार शिविर सूचना........३
३) गणितीय आधार-एक सही तिथिपत्रक का........४
४) गुरूकुल परली में यज्ञशाला उद्घाटन महोत्सव........१०
५) ओह ! पं.प्रेमचंद्रजी 'प्रेम' चल बसे।........१६
६) सृष्टि विज्ञानवेत्ता का निधन........१८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी........१९
२) आदि वेदमाऊली, देई सर्वभूतां सावली........२०
३) मधुपर्क विधी-गोड जीवनाची वीथी........२२
४) गाथा वाचू दयानंदांची........२७
५) संस्कार शिविरांची सूचना........२८
६) वार्ता विशेष........२९
७) शोक वार्ता........३०
८) खास वाचकांसाठी-म.दयानंदांचे कॉमिक्स (मराठी)........३१

• प्रकाशक •
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

thearyasamaj.org

लहर नरेन्द्र मोदी की .....

देश में कुछ मानवोपकारक कार्य होना हो तथा सर्वोत्थान की दृष्टि से यथार्थ परिवर्तन के प्रयास सफल होते हो तो उसके लिए वहां की शासन व्यवस्था उत्तम होनी चाहिए। ईमानदारी व सच्चाई का माहौल बनाना हो, तो वहां की राजनीति करनेवाले लोगों की मानसिकता भी स्वच्छ, प्रामाणिक व राष्ट्रहित में उत्साहवर्धक होनी चाहिए, तभी तो उस देश की सभ्यता व संस्कृति का विकास होकर आदर्श समाजनिर्मिति की प्रक्रिया सुरू होने में मदत मिल सकती है। अन्यथा देश रसातल को पहुंचने में देर नहीं लगती।

कई वर्षों से भारत की राजनीति का स्तर बहुत ही घटिया बन चुका है। जनता की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में आज तक की कांग्रेस सरकारें विफल हो चुकी हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में समृद्धी, सुरक्षा, सुख-शान्ति का वातावरण नहीं है। विगत पन्द्रह-बीस वर्षो से तो साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, सामाजिक व नैतिक अधः पतन आदि दोषों के बढने से देश सर्वाधिक प्रदूषित हो चुका है। ऐसी अवस्था में देश को बचानेवाले समर्थ पर्यायी नेतृत्व की प्रतीक्षा में आज देश का हर एक नागरिक है। जब कि श्री नरेंद्र मोदीजी के माध्यम से देश को नई सुव्यवस्था मिलने के आसार नजर आ रहे हैं। पिछले दस वर्षों से मनमोहनसिंह के नेतृत्ववाली युपीए सरकार सर्वाधिक अकार्यक्षम व असफल रही है। इसलिये अब लोगों के दिल दिमाग में मोदीजी जैसे आदर्श शासक की छबी पूरी तरह से दृढी हो चुकी है। श्री मोदीजी की क्रियाशीलता, विकास की योजनाएं उनका प्रभावशाली व्यक्तित्त्व, प्रखर देशाभिमान तथा देश के लिये कुछ कर गुजरनेकी उनकी दृढ आकांक्षा आदि बातों के कारण वे जनमानस में स्थान पा चुके हैं। इसी कारण आज भाजपा दल से उपर उठकर लोग उन्हें चाहते हैं। गत चौदह वर्षों में उन्होंने गुजरात राज्य को विकास का नया मॉडल बनाया। वहां पर सामाजिक सौहार्द, शान्ति व खुशहाली का वातावरण निर्माण करने और यहां तक कि साम्प्रदायिक ताकदों को रोखने में वे सफल रहे हैं। मोदीजी की कार्यक्षमता, दूरदृष्टि, सकारात्मक दृष्टिकोण, विलक्षण प्रतिभाशक्ति, जबरदस्त आत्मविश्वास आदि गुणों के कारण वे प्रधानमन्त्री पद के लिए निश्चय से सुपात्र हैं। यद्यपि विरोधी दल उनपर नानाविध आरोप लगा रहे हैं फिर भी प्रजाजनों के हृदय में दृढ स्थान पानेवाले मोदीजीने देश में परिवर्तन लाने की बहुत बडी क्षमता है। ऐसे व्यक्तित्त्व के राजतिलक हेतु कामना !

thearyasamaj.org

श्रुति संदेश

सुशिक्षा का प्रचार व प्रसार

विश्वे देवाः शृणुतेमँ हवं मे येऽअन्तरिक्षे यऽउप द्यवि ष्ठ ।
येऽअग्नि जिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ।।
(यजु.३३/५३)

अन्वयार्थः- हे (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोगो ! तुम (ये) (अन्तरिक्षे) आकाश में (ये) जो (द्यवि) प्रकाश में (ये) जो (अग्निजिह्वाः) जिह्वा के तुल्य जिनके अग्नि हैं वे (उत) और (वा) अथवा (यजत्राः) सङ्गति करनेवाले पूजनीय पदार्थ हैं, उनके जाननेवाले (स्थ) हूजिये । (मे) मेरे (इमम्) इस (हवम्) पढने-पढाने रूप व्यवहार को (उप, श्रृणुत) निकट से सुनो । (अस्मिन) इस (बर्हिषि) सभा वा आसन पर (आसद्य) बैठ कर (मादयध्वम्) आनन्दित होवो ।।

भावार्थः- हे मनुष्य ! तुम जितने भूमि, अन्तरिक्ष और प्रकाश में पदार्थ है उनको जानकर विद्वानों की सभा कर विद्यार्थियों की परीक्षा कर विद्या सुशिक्षा को बढा और आप आनन्दित होके दूसरों को निरन्तर आनन्दित करो ।।

ग्रीष्मकालीन 'संस्कार शिविरों' की सूचना

प्रान्तीय सभाद्वारा विद्यार्थियों के नवनिर्माण हेतु वरवटी (ता.भालकी), औराद (गु.) (ता.उमरगा), औराद शहा.(ता.निलंगा)व धर्माबाद इन चार स्थानों पर 'मानवता संस्कार एवं आर्य वीर दल शिविर' होंगें ।

(विस्तृत जानकारी पृष्ठ २८ पर देखें ।)

उदगीर में 'आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर'

सभा के निर्देशन में आर्य समाज उदगीर द्वारा आगामी दि. २५ मई से १ जून २०१४ तक आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में वैदिक विद्वानों व विदुषियों के सान्निध्य में कक्षा ५ से पदवी तक की छात्राओं (कन्याओं) को उनके सर्वंकश विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा। वैदिक विचारों के माध्यम से कन्याओं मे मानवीय मूल्यों व संस्कारों का बीजारोपण किया जायेगा। दिनभर की व्यस्त दिनचर्या में योगासन, प्राणायाम, विविध क्रीडा प्रकार, वैदिक यज्ञ, विभिन्न विषयोंपर व्याख्यान, भजन, शंका समाधान आदि कार्यक्रम होंगें । **आमंत्रित विद्वान** - आचार्य हरिसिंहजी आर्य (दिल्ली), पं. सुधाकरजी शास्त्री, पं. प्रतापसिंहजी चौहान, मारूतीराव घोरपडे, प्रा.डॉ. शारदा तुंगार, श्रीमती इंदुमती सावंत, सौ.सीताबाई निरमनाळे आदि।

thearyasamaj.org

गणितीय आधार-एक सही तिथिपत्रक का

- आचार्य दार्शनेय लोकेश

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वतेंति कामकारतः।
न सः सिद्धमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥
तस्माच्छास्त्रंप्रमाणं ते कार्यकार्यव्यवस्थितौ
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि

(श्रीमद्भगवद्गीता - १७/२३,२४)

शास्त्री (शास्त्रज्ञ)या आचार्य (लोकशिक्षक) के लिये बहुत आवश्यक है कि वे शास्त्र के प्रति आगाह, जागरूक और उत्तरदायी भी हों, यदि ऐसा नहीं होगा, तो ये दोनों ही संसार के लिये सर्वाधिक निरूपयोगी और घातक सिद्ध हो जायेंगे । मनु महाराज ने हमें एक उपदेश में स्पष्ट किया है कि -

अनुमन्ता विशासिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातकाः॥ (मनुस्मृति १/५)

इस उपदेश की व्याख्या को समझने पर हम समाज में व्यवहार्य बुराइयों के लिये ऐसे सभी शास्त्रज्ञ या आचार्यादि को दोषी मान सकते हैं, जो कहीं न कहीं शास्त्र और सत्य की अनदेखी करके अपनी पण्डिताई को समाज पर थोपे हुये हैं। आज अगर समाज में अशुद्ध पंचांग व्यवहार्य हो रखे हैं, तो शास्त्र की अवहेलना करनेवाले उन पंचांगकर्त्ताओं की दोषलीला में वो सारा समाज भी समरूप दोषी ही होगा, जो कि उन शास्त्रविरूद्ध पंचांगों का पालन कर रहा है। समाज को संगठित होकर इसके विरूद्ध खडा होना होगा ।

आज भारत की धरती पर जितने भी तिथिपत्रक, जिन्हें परिचित भाषा में पंचांग नाम से जाना जाता है, इस एक बुराई के स्पष्ट उदाहरण हैं, जिनमें बहुत कुछ तो बहुत है, परन्तु सत्य बहुत कम है । संवत् २०६४ जब से कि श्री मोहन कृति आर्ष तिथिपत्रक समस्त भारत की वैदिक जनता के सामने आया है, तब से इस दिशा में बडी जन जागृति उभरी है । इस जागृति को अब टालू प्रयासों से तुष्ट कर पाना किसी के लिये भी सम्भव नहीं होगा । यद्यपि विषय जटिल और तकनीकी आधार की व्याख्या का है, फिर भी मैं चाहूंगा कि सरल से सरल भाषा में एक सही तिथि-पत्रक के आवश्यक आधार को स्पष्ट कर सकूं। आईये इसे यथा संभव सरलभाषा में समझने-समझाने का प्रयास करें।

तिथिपत्रक (पत्रा या पंचांग) के न्यूनतम आवश्यक अंग हैं-१) अयन, २) विषुव, ३)ऋतु ४) मास (सौर एवं चान्द्र), ५) पक्ष, ६) तिथि (सूर्य एवं चन्द्र उदयास्त सहित) ७) दिनमान एवं रात्रिमान और ८) नक्षत्र । ये सारे तथ्य गणितीय हैं अर्थात् अनुमान्य नहीं अपितु प्रत्यक्ष हैं। सौर मास से संक्रान्तियां और चान्द्र मास से पाक्षिक तिथियां जुडी हुयी

thearyasamaj.org
हैं और ये भी प्रत्यक्ष है। उनकी भूगोल से लेकर खगोल तक में व्याप्ति ही पहचान है। कालान्तर में फिर षष्ठि संवत्सर और वारों के आकलन को भी इस व्यवस्था से जोडकर तिथिपत्रकों की विषयवस्तु बढा दी गयी। वैदिक व्यवस्था में इनका कोई सन्दर्भ नहीं है। कालगणना में एक आवश्यक सहायता के लिये इनको अपनाया गया हैं

ऋग्वेद में **'उक्षा दाधार पृथ्वीमुत द्याम्'** कहा गया है। अर्थात् सूर्य पृथ्वी को धारण किये हुये है। यह वैदिक सत्य प्रत्यक्ष में भी अनुभूत है। सूर्य के आकर्षण से निर्धारित एक नियत मार्ग में पृथ्वी सतत विचरण करती है। पृथ्वी पर से हमें सूर्य जिस मार्ग पर चलता हुआ भासता है, उसे ज्योतिष की पारिभाषिक शब्दावली में **क्रान्तिवृत्त** कहते हैं। इस क्रान्तिवृत्त मार्ग के इधर-उधर ९ अंश से बनें विस्तार को भचक्र कहते हैं। पृथ्वी अपनी नियत गतियों के अनुसार अयन-विषुव, ऋतु एवं दिन-रात का निर्माण करती है। अयन और विषुव तिथियों का संक्रान्तियों के निर्धारण में अति महत्वपूर्ण योगदान है और तिथिपत्रक को सही स्वस्थ रखने मे इन तिथियों का ही सारा कमाल है।

जिस प्रकार के सापेक्ष सूर्य क्रान्तिवृत्त में रहता है, उसी प्रकार पृथ्वी के सापेक्ष चन्द्रमा अपने विमण्डल में भ्रमण करता है। हम चूंकि पृथ्वी में रहते हैं, इस कारण हम अपनी स्थिति को सूर्य-चन्द्रमा को देखते हुये व्यक्त करते हैं। हमें पृथ्वी का नहीं, सूर्य और चन्द्रमा का चलना और चलते रहना दिखता है। चन्द्रमा अधिक गतियुक्त है और वह जब भी सूर्य की तुलना से १२ अंशों का अन्तर बना लेता है, तो एक तिथि का निर्माण पूरा करता है। इस प्रकार किसी भी तिथिपत्रक की विषयवस्तु मुख्य रूप से सूर्य, चंद्र और पृथ्वी ही हैं।

एक चौथा भी घटक है, और वह है नक्षत्र, जो कि है तो बेहिसाब परन्तु पत्रक की दृष्टि से वैदिक मार्गदर्शनानुसार ग्राह्य केवल २८ ही हैं। लगता है कि फलित ज्योतिष के लिये जो काल्पनिक भचक्र लिया गया है। उसको भाग (विभाजन) की सुविधा से २७ भागों में बांटकर एक भाग को १३ अंश २० कला के बराबर लिया गया है। यह एक गम्भीर विसंगतिपूर्ण दोष है। इस दोष के लिये किसी को जिम्मेदार तो नहीं ठहराया जा सकता, परन्तु यदि पंचांगों का **'दृग्गणित मतेन'** लिया जाना शास्त्र सम्मत है, तो किसी भी तिथिपत्रक के गणितकर्ता को इस असत्य स्वीकृति से बचकर ही सत्य कथन करना आवश्यक होगा।

सत्य यह है कि चित्रा नक्षत्र एक अंश का भी नहीं है और उसकी सीध में बने रहने हेतु चन्द्रमा अधिक से अधिक ५० मिनट तक रह सकता है। पुष्य नक्षत्र ३ अंश ३७ कला के लगभग का तो

thearyasamaj.org

आश्लेषा साढे सत्रह और यहां तक कि रेवती २० अंशों के लगभग का है। एक खास बात यह है कि मेषादि राशियां भी काल्पनिक व्यवस्था की उपज है। अस्तु, वैदिक व्यवस्था में नहीं हैं। ये नक्षत्रों से स्थायी तौर पर सम्बन्धित भी नहीं हैं। उदाहरण के लिये आजकल अश्वनी नक्षत्र वृषभ राशि के पांचवे अंश से शुरू होता है और मेष राशि पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के समीप से शुरू हो रही है। मिथुन राशि में कृतिका और आर्द्रा के भाग सहित रोहिणी और मृगशिरा सहित चार नक्षत्रों को योग बनता है। अब यदि तिथि पत्रक सही है, तो उसे ये तथ्य ऐसे ही स्पष्ट करने होंगे। नहीं कर पाता, तो उसे आप सही तिथिपत्रक नहीं जान सकते। मान भले ही ले क्योंकि मानने का तो कोई पैमाना नहीं है, कुछ का कुछ भी मान सकते हैं। परन्तु तब तिथिपत्रक एक वैज्ञानिक विधि का अभिलेख नहीं रह जायेगा।

एक बात और भी ध्यान देने की है कि किसी भी राशि की आकृति का, उसके अन्तर्गत दर्शायी गई एकीकृत नक्षत्र आकृति से कोई तालमेल नहीं है। उदाहरण के लिये मेष राशि के अन्तर्गत तथाकथित अश्वनी, भरणी और कृतिका के प्रथम चरण को ही लीजिये। अश्वनी को अश्वमुख, भरणी को योनिमुख तथा कृतिका को छुरें के समान माना गया है। इन सब से मिलकर मेष राशि की मेढा आकृति कैसे हो जायेगी? मेरी सम्मति में यह ग्रीक और भारतीय संस्कृतियों के सम्मिश्रण का एक परिणाम है। नक्षत्रों को राशियों के साथ जोडकर देखना और सारे ही भचक्र को मनमर्जी के ढंग से ले लेना, यह सब फलित ज्योतिष के चक्कर में हुआ लगता है। स्पष्ट सिद्ध हुआ कि राशियां बहुत बाद में नक्षत्रों पर थोपी गई है। संक्रान्तियां पूरे १२ मासों की, मधु-माधव (वसन्त), शुक्र-शुचि (ग्रीष्म) नभस्-नभस्य (वर्षा), ईशा-ऊर्ज (शरद), सहस्-सहस्य (हेमन्त) एवं तपस्-तपस्या (शिशिर) वैदिक व्यवस्था है। किसी भी आर्ष तिथि पत्रक हेतु ऋतु सम्बद्ध व्यवस्था अपनाना अनिवार्य है। पूरी छः ऋतुओं को उत्तर तथा दक्षिणायण और वसन्त तथा शरद सम्पात के विषुव बिन्दुओं से नियन्त्रित किया गया है। ये सभी बिन्दु सही पंचांग की कसौटी है। विष्णु पुराण में एक श्लोक आता है-**अयनस्योत्तरस्यादौ मकरं**
यातिभास्करः।
ततः कुम्भं च मीनं च राशे
राश्यान्तरं द्विजः॥

अर्थात् उत्तरायण की शुरूवात के साथ भास्कर का मकर में प्रवेश जाना जाये, और यह जानकारी ऐसी है जो कि गणितीय तौर पर भी सिद्ध की जा सकती है। इसी प्रकार शिवमहापुराण के
तस्माद्दशगुणज्ञेयं रवि संक्रमणे बुधाः।
विषुवे तद्दशगुणमयनेतद्दशस्मृतम्॥

इस कथन में यही बात अधिक स्पष्ट करते हुये भगवान शिव ने विषुव और

thearyasamaj.org

अयन तिथियों को संक्रान्तियों के साथ जोडकर कहते हुये उपदेश किया है। यही नहीं और भी बहुत से आर्ष वचन उपलब्ध हैं, जैसे कि वराहमिहिर के प्रमाण से-

उद्गयनं मकरादौ ऋतवः
शिशिरादयश्च सूर्यवशात्।
द्विभवनं कालसमानं
दक्षिणमयनं च कर्कटकात्॥२५॥

सार यह है कि उत्तरायण घटित होते ही सूर्य की मकर संक्रान्ति भी होगी। वास्तव में उत्तरायण सूर्य की परमक्रान्ति (दक्षिण) का फलित है और इस परमक्रान्ति का फलित है सूर्य का २७० अंश पर पहुँचना। इसी परमक्रान्ति के कारण पृथ्वी पर दो पहचान बनती है - १) उस दिन उत्तरी गोलार्द्ध में दिनमान न्यूनतम व रात्रिमान अधिकतम होता है २) उस दिन सूर्य मकर वृत्त पर होगा अर्थात प्रतिछाया के रूप में निर्धारित मकर रेखा के उपर खडे होने पर आपकी छाया का लोप होगा।

ये सब बातें हम पाठकों को गणितीय तौर पर भी समझा सकते है, लेकिन उससे यह लेख जटिल हो जाने का डर है। फिर भी जिज्ञासु जन इसके लिये संवत् २०६७ का श्री मोहन कृति आर्ष तिथिपत्रक देख सकते हैं। आसमान में परमक्रान्ति धरती पर प्रत्यक्ष अधिकतम असमान दिनरात और साथ ही साथ मकर या कर्क संक्रान्ति के दिन मकर या कर्क रेखा पर छाया लोप, ये तीन बातें मकर या कर्क संक्रान्ति और उत्तरायण या दक्षिणायन की साक्षात् दृक्क पहचान हैं। ग्रेगोरी कैलेण्डर के अनुसार ये तिथियां २१/२२ दिसम्बर या २१/२२ जून बनती हैं और इसी दिन शुरू होते है शिशिर ऋतु एवं तपस् मास तथा वर्षा ऋतु एवं नभस् मास। चंद्रमास निर्धारिण इन संक्रान्तियों की अनुवर्ती (पिछलगू) व्यवस्था है।

अर्थ ये है कि तपस् मास की उक्त संक्रान्ति घटित हो जाने पर जो शुक्ल पक्ष आयेगा वह ही होगा माघ शुक्ल पक्ष। इसी प्रकार नभस् संक्रान्ति से श्रावण शुक्ल पक्ष को समझियेगा -

स्यात्दादि युग माघस्तपः
शुक्लो दिनंत्यचः। (यजुर्वेदंग ज्यो.)

यहां पर यह भी जान लेना चाहिये कि जनवरी में कभी सूर्य का परमक्रान्ति पर पहुँचना सम्भव नहीं है। अस्तु वहां (जनवरी में किसी भी दिन १ से ३१ तारीख तक) मकर संक्रान्ति भी असम्भव है। अगर कोई पंचांग या तिथिपत्रक २१/२२ दिसम्बर से हटकर कभी भी मकर संक्राति दिखावे, तो उपरोक्त मानकों पर वह असफल कहा जायेगा और उसे हम एक सही तिथिपत्रक कभी नहीं कह सकते। आप उस पंचांग में दिनमान और रात्रिमान देखें। अगर लघुतम दिनमान से हटकर मकर संक्रान्ति दिखायी गई है, तो उस पंचांग के गलत होने में कोई शक नहीं।

thearyasamaj.org

उसी प्रकार उत्तर से दक्षिण क्रान्ति को आते हुये या दक्षिण से उत्तर क्रान्ति में जाते हुये सूर्य पृथ्वी के सापेक्ष दो बार शून्य क्रान्ति पर आता है। सूर्य उस दिन विषुवत् रेखा पर होगा। इसी से उस दिन को विषुव, विषुवत या पहाडी बोली में बिखोत भी कहा जाता है। इस दिन सारे भूमण्डल में दिन-रात का बराबर होना आवश्यक है और यही नहीं धरती में भूमध्य रेखा पर खडे व्यक्ति का छायालोप भी होगा। यह इतनी प्रामाणिक तिथि है कि ठीक मध्याह्न में आप अपने स्थान पर किसी भी छडी की छाया से अपने स्थान का शुद्धतम भूपृष्ठीय अक्षांश भी जान सकते हैं। ये दिन वसन्त या शरद ऋतु के मध्य बिन्दु होते हैं। अंग्रेजी कैलेण्डर की वर्तमान व्यवस्था के अनुसार ये दिन २०/२१ मार्च अथवा २२/२३ सितम्बर होते हैं। वसन्त ऋतु के सन्दर्भ का उक्त प्रथम दिन (२०/२१ मार्च) ही वैशाखी कहलाता है। अस्तु किसी भी तथाकथित पंचांग में दिनमान और रात्रिमान का बराबर होना देखें। यदि वह २०/२१ मार्च को ही है और वैशाखी या वैशाख संक्रान्ति वही पंचांग अप्रैल में बता रहा है, तो निश्चित जानिये कि वह तथाकथित पंचांग सर्वथा गलत है।

यहां पर आप वैसे भी यह जान सकते है कि अयन और विषुवों की चार संक्रान्तियां ईस्वी कैलेण्डर में कहाँ हो रही हैं ? नोट करें कि एक भी संक्रान्ति अगर किसी भी माह की १४/१५ तारीख को नहीं हो सकती या फिर तब ही हो सकती है, जब कि अगला महिना कम से कम २३-२४ याने कि ५३-५४ दिनों का हो, जो कि व्यवस्थान्तर्गत नहीं है।

आजकल हम आचार्य मुंजाल की तरह ध्रुवांको की मदद से गणित करते हुये ग्रहों की स्थिति प्राप्त नहीं कर रहे हैं, जैसे कि लघुमानस के ये ग्रन्थकार अपने समय में करने को मजबूर थे। उन्होंने पाया कि गणितागत स्थितियां वास्तविक अयन एवं विषुव बिन्दुओं में सूर्य की स्थिति से मेल नहीं खा रही थी, अपितु एक निश्चित अन्तर वर्ष भर बना रहता था। समसामयिक तकनीकी अभाव के कारण सही गणित में न पहुंच पाने से आचार्य मुंजाल को एक नियम बनाना पडा, जिसमें कि इस उपरोक्त अन्तर को नियमानुसार घटा करके ही दृक स्थिति के तुल्य परिणाम हासिल करना होता था। यदि हम भी आज गणितागत स्थितियों को ले रहे होते, तो हमको भी वही कुछ करना पडता जो कि उन्होंने किया। किन्तु हम आज गणितागत नहीं, अपितु आधुनिक सूक्ष्म वेधशालाओं से प्राप्त दृक् स्थितियां ही लेते हैं, जिनमें किसी प्रकार के ध्रुवांक संशोधन (बीज संस्कार) की आवश्यकता नहीं रह जाती। इस प्रकार यदि कोई पंचांगकर्ता वेधशालाओं से दृक स्थितियों को लेकर पुनः उसमें किसी भी तरह का संशोधन करता है, तो वह तथाकथित संशोधन सुधार के निमित्त न होकर वास्तव

thearyasamaj.org

में विकृति का हेतु बनता है। ऐसी विकृत स्थितियों पर आधारित पंचांगों को आधुनिक भाषा में निरयन पंचांग कहकर पुकारा जाता है। जो कि कभी भी सही नहीं कहे जा सकते। अस्तु सही पंचांग के लिये दृक् स्थिति का अर्थात कथित सायन होना आवश्यक है।

इस प्रकार जो तिथिपत्रक या पत्रा आपको संक्रान्तियों की सही जानकारी देवे, चान्द्रमासों और नक्षत्रों की यथार्थ पहचान के साथ जानकारी देवे, वह ही सही तिथिपत्रक होगा और वह ही आपको सही व्रत-पर्व और त्यौहारों की जानकारी दे सकता है। यही नहीं सही ऋतुबोध एवं मलमासादि की सही जानकारी भी ऐसे ही किसी तिथिपत्रक से मिल सकती है।

समाज में सभी को एक सही पंचांग अथवा तिथिपत्रक की ललक होनी चाहिये। गलत पंचांगों को समाज से बाहर करने के लिये दृढ इच्छाशक्ति और सत्यनिष्ठा के साथ संकल्प बद्ध होकर चलने की अतीव आवश्यकता है।

(लेखक 'श्री मोहन कति आर्ष तिथिपत्रक' के सम्पादक एवं प्रसिद्ध गणितकर्त्ता हैं)

-सी २७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा(उ.प्र.)

- सभा के मानव कल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ.व श्री चिल्ले महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. व श्री काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – (वैदिक व्याख्यानमाला)
- मायर- मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.लदनिया योगासन प्रतियोगिता
- सौ.लदनिया प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

- समारोह का विस्तृत वृत्तान्त -

गुरूकुल परली में यज्ञशाला उद्घाटन महोत्सव

-प्रा. नरेश शास्त्री

उदारमना दानदाताओं द्वारा प्राप्त लगभग १० लाख रूपयों की लागत से परली-वैजनाथ (महाराष्ट्र) के श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम मे नवनिर्मित **'महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञशाला'** का उद्घाटन रविवार दि. ९ मार्च २०१४ को विभिन्न वैदिक विद्वानों, तपस्वी मुनिजनों व आर्य कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री एड्. प्रकाशजी आर्य के शुभ करकमलों से तथा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. सुरेंद्रपालजी आर्य (नागपुर), प्रसिद्ध आर्य उद्योजक एवं कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री लखमसीभाई वेलानी (पुणे), प्रो. ओमप्रकाशजी होलीकर आदियों के प्रमुख आतिथ्य में इस समारोह का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की अध्यक्षता जानेमाने दानवीर आर्य कार्यकर्त्ता व हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्री कपिलमुनिजी (तुकारामजी गंजेवार-धर्माबाद) ने की।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री प्रकाशजी आर्य ने कहा, 'आज समग्र विश्व में अनेकों समस्याएँ प्राणिमात्र को दुःखसागर में धकेल रही हैं। अनैतिक विचारों का संकट सर्वत्र मंडरा रहा है। दूषित वायु, ध्वनि एवं जल व अन्न के बढते प्रदूषण से मानवमात्र का जीना बहुतही दुष्कर हो चुका है। ऐसी अवस्था में आर्य संस्थानों में यज्ञशालाओं का निर्माण होकर सर्व प्रकार के प्रदूषणों से समाज व विश्व को बचाया जा सकता है। इस दृष्टि से परली के श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम में नवनिर्मित विशाल याज्ञवल्क्य यज्ञशाला मुकुटमणि के रूप में महाराष्ट्र सहित दक्षिण भारत के सभी राज्यों के आर्यजनों को प्रदूषण से बचाकर यज्ञमय जीवन जीने हेतु प्रेरणा देती रहेगी।'

प्रातः वैदिक विद्वान डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में यज्ञशाला प्रवेशविधि संपन्न हुई। इस विशेष यज्ञ में आर्य दम्पती सौ.व श्री लखमसीभाई वेलानी, सौ. व श्री उग्रसेन राठौर, सौ. व श्री जुगलकिशोर लोहिया तथा डॉ. सौ. व श्री मधुसूदन काले यजमान के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर ऋग्वेद की पावन ऋचाओं का सस्वर पाठ किया गया। ब्रह्मा श्री शास्त्रीजी ने कहा, 'यज्ञ हमारी संस्कृति की आत्मा है। श्रद्धा व निष्ठा के साथ किए जानेवाले यज्ञों के

thearyasamaj.org

अनुष्ठान के लिए यज्ञशाला एक तरह से आधारस्वरूप मानी जाती है। इस दृष्टि से गुरूकुल परली में बनी याज्ञवल्क्य हम सबके लिए प्रेरणास्थान बनेगी । इस यज्ञशाला में ब्रह्मचारियों व मुनिजनों द्वारा प्रतिदिन किए जानेवाले यज्ञों से निकली सुगंधी इस परिसर के वातावरण को सुरभित करती रहेगी।' पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य ने कहा, 'प्रत्येक मनुष्य को जीवन में यज्ञीय विचारों व भावनाओं को बढाना चाहिए। परली की यह यज्ञशाला युगों-युगों तक हम सभीको यज्ञमय जीवन जीने हेतु दिव्य सुगंधी के साथ ही उत्तम विचारों को भी प्रदान करते रहेगी। आयोजकों की दूरदृष्टि व कार्यकर्त्ताओं का परिश्रम बहुतही सराहनीय है।'

तत्पश्चात् सार्वदेशिक के महामंत्री श्री प्रकाशजी आर्य के करकमलों से ओम् ध्वजा फहराई गयी। मुख्य समारोह में सर्वप्रथम गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने वैदिक मंगलाचरण किया। महाराष्ट्र सभा व गुरूकुल संस्था के मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिजी ने अपने प्रास्ताविक भाषण में यज्ञशाला व अन्य उपक्रमों के नवनिर्माण के संदर्भ में विस्तार से जानकारी दी। तत्पश्चात् यज्ञशाला के निर्माण हेतु सर्वाधिक दान व सहयोग देनेवाले श्री लखमसीभाई वेलानी, डॉ. देविदासरावजी नवलकेले, जुगलकिशोर दायमा, दयाराम बसैये तथा अन्य सहयोगी महानुभावों का सम्मान किया गया। साथ ही गुरूकुल के छात्रों को भी सम्मानित किया गया।

छः पुरोहितों का सम्मान

वैदिक विचारों, सोलह संस्कारों एवं आर्य समाज के मन्तव्यों को सामान्य लोगों तक पहुंचाने में बहुत ही सक्रिय भूमिका निभानेवाले महाराष्ट्र के छः समर्पित पुरोहित-पंडितों व विद्वानों का सम्मान भी इसी विशेष समारोह में किया गया।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरूकुल परली में आयोजित इस सम्मान समारोह में वैदिक विद्वान एड्. प्रकाश आर्य (महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ. धर्मेंद्रकुमारजी शास्त्री (सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी), पं. सुरेंद्रपालजी आर्य (आर्य उपदेशक, नागपुर), तपस्वी संन्यासी, पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी (प्रधान, महाराष्ट्र सभा, परली), स्वा.सै.कपिलमुनिजी, दयाराम बसैये, राजेंद्र दिवे, रामपाल लोहिया, उग्रसेन राठौर आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर समर्पित पुरोहित सर्वश्री पं. विश्वनाथजी शास्त्री (पिंपरी, पुणे), पं. राजवीरजी शास्त्री (सोलापुर), पं. सुधाकरजी शास्त्री (सभा उपदेशक), पं. दिनकरराव देशपांडे (गुंजोटी), पं. प्रियदत्तजी शास्त्री (हैदराबाद), इन पुरोहित पंडितों को शालवस्त्र, श्रीफल, पुष्पहार, स्मृतिचिन्ह एवं अभिनंदन पत्र देकर उपरोक्त

thearyasamaj.org

विद्वानों के करकमलों से सम्मानित किया गया । समारोह में दिवंगत पुरोहित स्व विश्वमित्रजी शास्त्री (हिसार) को भी मरणोपरान्त पुरस्कृत किया गया ।इस समारोह में सम्मानित पुरोहितों ने महर्षि दयानन्द की विचाराधारा व वैदिक संस्कारों के प्रचार व प्रसार में अपने सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प दोहराया तथा अपने जीवन के आजतक के अनुभवों को भी विशद किया ।

प्रमुख अतिथिरूप विद्वानों ने पुरोहितों द्वारा समाज व राष्ट्र निर्माण कार्यों की आवश्यकता को महसूस करते हुए आनेवाले समय में आर्य समाज के पुरोहितों से ही सही अर्थों में जागृति का कार्य हो सकेगा, यह आकांक्षा जताई । उन्होंने इस सम्मान कार्य हेतु महाराष्ट्र सभा को धन्यवाद दिए और यह प्रांतीय सभा अन्य सभाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनें, ऐसी अभिलाषा व्यक्त की ।

जलप्याऊ का उद्घाटन

यज्ञशाला के उद्घाटन के साथ ही श्रद्धानन्द गुरूकुल, परली के ब्रह्मचारियों एवं मुनिजनों के लिए पीने के पानी की उत्तम सुविधा हो, इस उद्देश्य से गुरूकुल के मध्यवर्ती स्थान पर **वरूण जलप्याऊ** का निर्माण किया गया है । लातूर के उपजिलाधीश डॉ. प्रतापजी सुग्रीव काले,उनकी सहधर्मचारिणी सौ. ज्योत्स्ना काले एवं समस्त काले परिवार द्वारा प्रदत्त ५१ हजार रूपयों की राशि से। बनें इस वरूण जलप्याऊ का उद्घाटन सामाजिक कार्यकर्त्री माता सौ.डॉ.विमलादेवी काले के करकमलों से सम्मन्न हुआ। इस अवसर पर उपरोक्त विद्वानों के साथ ही काले परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। इस बृहद् समारोह में अन्य विद्वानों ने भी अपने ओजस्वी विचारों से प्रेरित किया। इस कार्यक्रम का संचालन पं. तानाजी शास्त्री एवं प्रा.अरूण चव्हाण ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव डॉ.नयनकुमार आचार्य ने रखा। कार्यक्रम के लिए आर्यजन दूर-दूर से भारी संख्या में पधारे थे ।

अन्तर्जातीय विवाह सम्मेलन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दि. ८ मार्च २०१४ को आर्य वानप्रस्थाश्रम (गुरूकुल) के गुरू विरजानन्द सभागृह में **'राज्यस्तरीय अन्तर्जातीय विवाहित परिवार एवं विवाहेच्छु युवक व युवतियों को परिचय सम्मेलन'** उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । इस सम्मेलन की अध्यक्षता में जानेमाने समाजसेवी आर्य कार्यकर्त्ता स्वा.सै.श्री कपिलमुनिजी (तुकारामजी गंजेवार) ने की । इस अवसर पर सर्वश्री प्राचार्य देवदत्त तुंगार, आचार्य पं. धर्मदीपजी लोखण्डे, सभा के उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री, आर्य भजनोपदेशक पं.

thearyasamaj.org

सुरेन्द्रपालजी आर्य (नागपुर), प्रान्तीय सभाप्रधान स्वामी श्रद्धानन्दजी आदियों ने मनुष्यकृत जातिव्यवस्था व मत-पन्थों की बढती विषैली परम्परा को मानवता की घोर विरोधी बताकर आर्यजनों को इसे समाप्त करने का आग्रह किया।

अपने विस्तृत वक्तव्य में श्री लोखण्डे ने बताया कि 'आज के आधुनिक विज्ञान युग में मानव हर क्षेत्र में परिवर्तन के साथ प्रगति कर रहा है, किन्तु घर-परिवार के रिश्ते जोडते समय अपनी जाति बिरादरी को खोजता है। विडम्बना की बात है कि आर्यजन भी विवाह के समय महर्षि दयानन्द की गुण, कर्म स्वभाव तथा शिक्षादि मान्यताओं की ओर अनदेखा करते हैं।' प्राचार्य श्री तुंगारजी ने कहा- 'जातिप्रथा के कलंक से समाज व राष्ट्र दूषित हो रहा है, जब तक आर्यजन अपने घरों में अन्तर्जातीय विवाह नहीं करायेंगे, तब तक सही अर्थों में राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सुखसमृद्धि स्थापित नहीं हो सकेगी।' पं. सुरेन्द्रपालजी ने मधुर भजनों के माध्यम से मत-पन्थों के बढते प्रवाह के रोकथाम हेतु महर्षि दयानन्द प्रणित वैदिक मन्तव्यों द्वारा विश्व के मानव समूह को जोडने की कार्यप्रद्धति को स्वीकारने का आवाहन किया। महाराष्ट्र में अन्तर्जातीय विवाह के आन्दोलन को गति प्रदान करनेवाले पू. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने कहा कि 'वेदज्ञान के अनुसार मानवधर्म वृद्धि हेतु मत-पन्थ व जाति की दीवारों को तोडने के लिए आर्यों को तत्पर रहना चाहिए।'

इस समारोह की प्रस्तावना संयोजक एड्. श्री जोगेन्द्रसिंह चौहान ने की तथा संचालन सभामन्त्री श्री राजेंद्र दिवे ने किया। इस सम्मेलन में राज्य के विभिन्न स्थानों से पधारे अन्तर्जातीय विवाहित दम्पतियों तथा इच्छुक युवक-युवतियों ने भारी संख्या में भाग लिया। समारोह में अन्तर्जातीय विवाह के अभियान के प्रचारक सर्वश्री माणिकराव भोसले, रामेश्वर राऊत, अनंत लोखण्डे आदि उपस्थित थे।

वानप्रस्थ चिन्तन शिविर

प्रान्तीय सभा के तत्त्वावधान में ८ मार्च को सायं. ४ बजे वानप्रस्थ चिन्तन शिविर व दीक्षा समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री विवेकमुनिजी, विज्ञानमुनिजी, अमृतमुनिजी, आर्यमुनिजी, सोममुनिजी, उत्तममुनिजी आदियों ने वानप्रस्थ आश्रम की आवश्यकता, महत्व, वर्तमान समय में कार्यपद्धति आदि विषयों पर बल दिया। इन वक्ताओं ने कहा- 'आर्य विचारों के प्रचार व प्रसार तथा गुरूकुलों के संचालन की दृष्टि से वानप्रस्थाश्रम का सर्वाधिक महत्व है। प्रमुख मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिजी ने अपने विस्तृत व्याख्यान में बताया कि आत्मकल्याण, योगसाधना, सामाजिक कार्य आदि कार्यों में मुनिजनों का योगदान सराहनीय रहेगा। साथ ही विद्यार्थियों व

thearyasamaj.org

युवकों में चरित्र निर्माण व वैदिक धर्म के प्रसार के लिए मुनिजन उपयुक्त सिद्ध हो सकते हैं। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानंदजी के करकमलों से सेवाभावी कार्यकर्त्ता श्री दत्तात्रय काले ने वानप्रस्थ दीक्षा लेकर **ब्रह्मनादमुनि** यह नाम धारण किया। वानप्रस्थ दीक्षा यज्ञ के ब्रह्मा पद को वैदिक विद्वान् डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने सुशोभित किया। समारोह का संचालन सभा के उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री ने किया।

आर्य संगठन सम्मेलन

रात्रकालीन सत्र में **आर्य संगठन सम्मेलन** सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री प्रकाशजी आर्य, डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री एवं पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य ने आर्यों को संबोधित किया। सत्र की अध्यक्षता प्रान्तीय सभा के प्रधान पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी ने की। आरम्भ में पं. प्रतापसिंहजी चौहान ने भजन प्रस्तुत किये। तत्पश्चात् पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य ने अपने भाषण में कहा - 'सम्प्रति समाज बडे पैमाने पर अविद्या, अन्धःकार व अनीति के मार्ग पर गतिमान है, ऐसी स्थिति में आर्य समाज के विचारों का प्रसार होना अत्यंत आवश्यक है। दयानन्दद्वारा निर्दिष्ट वैदिक विचारों के प्रचार के लिए आर्य समाज को जागृत होना चाहिये।'

डॉ. धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री ने कहा, महाराष्ट्र की पावन धरती महान सन्तों, कृतिशील सुधारकों के जीवन व कार्यों से पुनीत हो चुकी है, अतः यहाँ का वातावरण महर्षि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को प्रसारित होने में अनुकुल है। यहां के आर्यजन एवं गुरूकुल के स्नातक प्रयत्नपूर्वक इस कार्य में जुट जाये तो निश्चय ही आर्य समाज गतिमान होने में समय नही लगेगा।' सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य ने अपने मौलिक व्याख्यान में आर्यजनों को अपने आलस्य, अकर्मण्यता व आपसी मतभेदों को दूर कर संघटित होने का आवाहन किया। उन्होंने कहा- 'यदि हम सच्चे मन से आर्य समाज का कार्य करेंगे,तो इसमें हमें बहुत बडा यश मिलेगा। महाराष्ट्र के गुरूकुलीय स्नातकों ने दयानन्द के संदेश को नगर - ग्राम के घर-घर तक पहुंचाने के लिए संकल्प करना आवश्यक है।' उन्होंनें ऋषि के क्रांतिकारी जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा-'ऋषि का जीवन सभी महापुरूषों में सर्वोत्तम है और कार्य भी उतना ही महान ! उनके ग्रंथों में जो ज्ञान विद्यमान है, वह दुनिया के किसी भी ग्रंथ में नहीं है।' बंगाल के विद्वान देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के उद्धरण का स्मरण दिलाते हुए उन्होंने कहा- 'नाखुनों से लेकर सर की चोटी तक दयानन्द का जीवन बेदाग था। मैं तो अगले जन्म में भी दयानन्द की ही कार्य करूंगा।' श्री आर्य ने आगे कहा- 'आर्य संगठन के विषय में हमें बुजुर्गों के आदर्शों को सामने रखते हुए

thearyasamaj.org

प्रचार कार्यक्रमों का नियोजन करना चाहिए। महात्मा हंसराजजी ने बताये हुए सत्संग, स्वाध्याय, सेवा, समर्पण, स्मरण (ईश्वर) इन पंचसकारों के आचरण पर विशेष ध्यान देने की बात श्री प्रकाशजी आर्य ने कही। समारोह के अध्यक्षीय समापन भाषण में स्वामी श्रद्धानन्दजी ने कहा- 'आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को पूर्णतः पवित्र आचरण, समर्पण, त्याग व उत्साह के साथ काम करने हेतु आगे आना चाहिए। इसी के सिवाय आर्य समाज का कार्य नहीं हो सकेगा।' धन्यवाद प्रस्ताव पं. सुधाकर शास्त्री ने रखा।

प्रकाशन व पुरस्कार वितरण

गुरूकुल आश्रम परली में दि.९ मार्च २०१४ को सम्पन्न हुए विशेष समारोह में लातूर से प्रकाशित होनेवाले साप्ताहिक **लातूर समाचार** के विशेषांक एवं **वैदिक गर्जना** मासिक के मार्च २०१४ अंक का विमोचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाशजी आर्य एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर उपरोक्त विद्वानों ने कहा- 'आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का कार्य कभी न बंद होवे, इस पंडित लेखरामजी के संदेश को ध्यान में रखते हुए आर्यजनों को लेखन व व्याख्यान के कार्य में सदैव गतिमान रहना चाहिए। आजकल के मिडीया के युग में जब तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हम आर्य विचारों का प्रसार नहीं करेंगें और प्रवचन व व्याख्यानों द्वारा लोगों को वैदिक विचारों की प्रेरणा नहीं देंगे, तब तक वैदिक धर्म का प्रसार नहीं होगा।'

ज्ञात हो कि लातूर के कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री दयानन्द जडे साप्ताहिक लातूर समाचार के सम्पादक हैं। इनके पिताजी स्व.श्री शंकरराव जडे हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे। इन्होंने ५० वर्ष पूर्व लातूर से इस वृत्तपत्र का प्रकाशन बडी निष्ठा के साथ सुरू किया, जिसकी परम्परा उनके सुपुत्र श्री दयानन्दजी जडे उत्साह से चला रहे है। यह साप्ताहिक आर्य विचारों के प्रसार हेतु पूर्णतः समर्पित है।

इसी समारोह में सभाद्वारा आयोजित राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन व विद्यालयीन निबंध तथा वृक्तृत्त्व स्पर्धाओं में पुरस्कार पानेवाले विजेता छात्रों को पारितोषिकों का वितरण भी किया गया। साथ ही यज्ञशाला के दानदाताओं, गुरूकुल के सहयोगी व वरिष्ठ स्नातकों का सम्मान भी किया गया। कुल मिलाकर कार्यक्रम बहुतही अच्छा रहा। ऐसे ही समय अचानक तेज वर्षा व ओले पडने से कार्यक्रम में कुछ कठीनाइयां अवश्य आयी, किन्तु ईश्वर की कृपा व आर्यजनों के सोत्साह पधारने से समारोह पूर्णरूपेण यशस्वी रहा। ईश्वर को नमन व सभी के धन्यवाद !

-कै.ल.दे.महिला महाविद्यालय,परली

thearyasamaj.org

शोक समाचार

ओह ! पं. प्रेमचंद्रजी 'प्रेम' चल बसे ।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी, पुरानी पीढी के वयोवृद्ध कवि, जानेमाने आर्य भजनोपदशेक कर्मठ वैदिक पन्थानुगामी श्री पं. प्रेमचन्द्रजी प्रेम की गत मंगलवार दि. १ अप्रैल २०१४ को प्रातः ६.१५ बजे. दुःखद निधन हुआ। उन्होंने लगभग ९८ वर्ष की दीर्घायु पायी। वे अपने पीछे एक पुत्र प्रमोदकुमार, तीन कन्याएं, दामाद, पुत्रवधू, पौत्रादि परिवार को छोडकर संसार से विदा हुये।

स्व. पं.प्रेमचन्द्रजी 'प्रेम' का जन्म महाराष्ट्र के हिंगोली नगर में सन १९१६ में हुआ। आपके पिता, दादाजी तथा काकाजी सभी धार्मिक विचारोंवाले तथा कबीर पंथ को मानने वाले थे।

उस समय किल्लेधारुर के आर्य भजनोंपदेशक पं. आर्यभानुजी सभा की ओर से प्रचार हेतु हिंगोली आया करते थे। उनके भजनों को सुनकर प्रेमचंद्रजी बहुत प्रभावित हुये। उन्हीं की प्रेरणा से उनके मन में भी भजनोपदेशक बनने की धून संवार हो गयी। पंडितजी का सान्निध्य, मार्गदर्शन व। अथक परिश्रम से वे आगे चलकर एक कुशल भजनोपदेशक बन गये। ६०-७० वर्षों तक संपूर्ण देश में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु तन, मन से लगे रहें। इस धर्मप्रचार कार्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुशोभादेवीजी ने पूर्ण सहयोग दिया, जिनका कि १९९८ में मधुमेह से देहान्त हो गया।

सन् १९३८ में निजाम द्वारा **'सत्यार्थ-प्रकाश'** पर लगाये प्रतिबन्ध के विरोध में किये गये सत्याग्रह में २२ वर्ष की आयुवाले किशोरवयीन प्रेमचंद्रजी ने भी भाग लिया। उस समय तक आप भजनोपदेशक बनकर पं.नरेन्द्रजी के आदेशानुसार निजाम के विरुद्ध अपनी कविताओं के द्वारा जनजाग्रति का कार्य कर रहे थे। आपने पूरे देश में तत्कालीन सभी उपदेशकों के साथ धर्मप्रचार किया। पुरानी पीढी के प्रचारकों में जो धर्मधून थी, वह आप में भी देखने मिलती हैं। सत्याग्रह से पूर्व आप पं. धुरेन्द्र शास्त्रीजी के साथ निजाम के विरुद्ध जनजाग्रति के कार्य में संलग्न थे, मगर जैसे ही सत्याग्रह शुरू होने का समय आया, आपने इसमें सम्मिलित होने की ठान ली। सभी ने इतनी कम आयु में सत्याग्रह मे शामील होने से मना कर दिया और जनजाग्रति के महत्वपूर्ण कार्य को करते रहने का आग्रह किया। इस सत्याग्रह का नेतृत्व लौहपुरूष स्वामी स्वतंत्रतानन्दजी तथा महात्मा नारायण स्वामीजी कर रहे थें। पंडितजी ने भी सत्याग्रह में शामील होने हेतु अपना हठ कायम रखते हुए भूख हडताल आरंभ कर दी। अन्ततो

thearyasamaj.org

गत्वा उनके उत्साह को देखते हुए पं. धुरेन्द्र शास्त्रीजी को उनकी सिफारिश प.नरेन्द्रजी से करनी पडी और पंडितजी ने भी उन्हें इजाजत दी। इस सत्याग्रह में आपको २५ माह की कारावास की सजा गुलबर्गा जेल में भोगनी पडी, जिसमें उन्होंने अनेकों यातनाएं सहन की। इस सत्याग्रह के फलस्वरूप आगे आपको आंध्र सरकार ने दस एकर भूमि निजामाबाद जिले के मदनूर तहसील में दो जगहों पर विभाजित कर दी, तब से आप मदनूर में ही अपने एकलौते पुत्र तथा परिवार के साथ अन्तिम समय तक यहीं पर रहें । आप भी अपने पिता की एकलौती सन्तान थे । पंडितजी बहुत ही प्रेमल स्वभाव के व्यक्ति थे, अपने 'यथा नाम तथा गुण' के नुसार आप साक्षात् 'प्रेम' की मूर्ति रहे। अपने नाम को आज ९८ वर्ष की आयु में अपने स्वभावानुसार सार्थक कर दिखाया । प्रचार कार्य हेतु परिवारों में जहां भी आपका जाना होता था, वहाँ पर आत्मियता से सम्बन्ध स्थापित कर देते थे। आपकी कविताएं **'प्रेम भजनावली'** इस काव्यसंग्रह के माध्यमसे कई भागों में प्रकाशित हुई जिसकी प्रतियां आज अनुपलब्ध हैं। उन्होंने जुल्म, कुरीतियों अन्याय, दमन के विरुद्ध अपने उत्तेजक विचारों को कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर जनता में जागृति लायी ।

३ वर्ष पूर्व उनकी एक टांग टूट गयी थी, तथा एक बार दायी तरफ के शरीर को अधांग वायु का झटका भी आ चुका था । साथ ही दाहिना हाथ ठीक से काम नहीं कर पाता था । फिर भी आप अपने सभी दैनिक कार्य स्वयं ही कर लेते थे। किसी को कष्ट देना आपके स्वभाव में नहीं था । अन्तिम समय तक आप उतने ही उत्साही, प्रसन्न व आनन्दमना रहे और वैदिक आदर्शो का पूर्णतया पालन करते रहे । उनकी दिनचर्या को सबके लिये प्रेरक रही है । आयु के ९८ वें वर्ष में भी वे प्रात: साढेचार बजे उठ जाते और आसन, प्राणायाम तथा नौली क्रिया का अभ्यास करते रहे। जो कोई भी आपसे मिलता था, वह आपके प्रेमल स्वभाव, प्रसन्न मुद्रा तथा आत्मियता के कारण आपके प्रति विनम्रता से नतमस्तक हो जाता था ।

आपने आजीवन देश, धर्म तथा जाति के लिये जो कार्य किया हैं, इसके लिए आर्यजगत् आपका सदैव ऋणी रहेगा। आपके मन में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को लेकर बडी चिंता थी। आखरी समय तक वे कविताओं का सृजन करते रहे, जिनका समय समय पर वैदिक गर्जना मासिक में प्रकाशन होता रहा । विशेष बात यह कि पंडितजीने जातिप्रथा के बन्धनों को तोडकर स्वयं के साथ ही आगे अपने परिवार के सभी सदस्यों के अन्तर्राजातीय विवाह किये । महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजों के साथ उनके निकट के सम्बन्ध रहे । सन.२०१२ में दिल्ली में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आपको सम्मानित किया गया है ।

ऐसे कर्मठ आर्य व्यक्तित्त्व के चले

thearyasamaj.org

जाने से आर्य जगत् में सैद्धांतिक विचारक की कमी महसुस होती रहेगी। पंडितजी के पार्थिव शरीर पर सायं. ४ बजे पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किय गये। इस अवसर पर हैदराबाद, बिचकुंदा, धर्माबाद, देगलुर, पुलकल आदि स्थानों से आर्यजन भारी संख्या उपस्थित थे।

सृष्टि विज्ञानवेत्ता पं. व्रतपालजी शास्त्री का निधन

वैदिक सृष्टिविद्या के क्रमिक विकास को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करानेवाले आर्य जगत् के प्रसिद्ध सृष्टिविज्ञानवेत्ता श्री व्रत्तपालजी सिद्धान्तशास्त्री का परली में दि. १ अप्रैल २०१४ को मध्यरात्रि में २.३० बजे दुःखद निधन हुआ। वे ८६ वर्ष के थे।

वे अपने पश्चात् सहधर्मिणी श्रीमती मंगलाबाई, सुपुत्र पं. वेदमित्र तथा कन्या, दामाद को छोड संसार से विदा हुए। श्री पं. व्रतपालजी २५ दिनों पूर्व यज्ञशाला उद्घाटन समारोह में सम्मिलित होने हेतु परली के श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम पधारे थे। यहीं पर वैद्यों के निर्देशन में प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सालय में रहते हुए स्वास्थ्य लाभ उठा रहे थे। मृत्यु से तीन दिन पूर्व अचानक उनकी हालत खराब हुई, तब उन्हें परली व अम्बाजोगाई के अस्पतालों में भर्ती कराया गया। अन्ततोगत्वा हृदयाघात के कारण उनकी मृत्यु हुई। यहीं से उनका पार्थिव शरीर मुम्बई भेजा गया, जहांपर वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार कराये गये।

पं. व्रतपालजी बचपनसे ही जिज्ञासुवृत्ति के थे। सृष्टि प्रक्रिया पर उनका चिन्तन रहा। वे पं.युधिष्ठिरजी मीमांसक व पं. आचार्य विजयपालजी के सान्निध्य में आये। उन्हीं की प्रेरणा से इस विषय पर संशोधन जारी रखा। फलस्वरूप १९९२ में उन्होंने **'वैदिक सृष्टिविज्ञान दर्शन'** नामक पुस्तक लिखी, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय के विषय को सप्रमाण चित्रों में दर्शाया गया है। इस ग्रन्थ में उन्होंने सृष्टिसम्बन्धी रहस्य को सुबोध, सरलशैली युक्त भाषा में प्रकट किया है। वे जगह-जगह जाकर सृष्टि विज्ञान के संदर्भ में चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाते और प्रचार करते थे। वे हैदराबाद निवासी थे। ऐसे चिन्तनशील जिज्ञासु व्यक्तित्त्व के चले जाने से आर्य जगत् का काफी नुकसान हुआ है।

प्रान्तीय सभा की ओर से इन दोनों दिवंगत आत्माओं को भावपूर्ण श्रद्धांजलि ! सभा एवं महाराष्ट्र की आर्य समाजें शोकाकुल दोनों परिवारों के दुःख में सम्मिलित हैं।

thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।

ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

आत्मकल्याणासाठी सर्वस्वाचा त्याग

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ओमित्येतत् ।।

(यम म्हणाले-) सर्व (चारही) वेद ज्या एका पदाचे वर्णन करतात, सर्व तपकर्मे जणु कांही त्या एका पदाचेच व्याख्यानभूत आहेत.ज्या पदाच्या कामनेने सर्व साधकवृंद ब्रह्मचर्य वृताला धारण करतात.(हे नचिकेता !) संक्षेपात सांगू इच्छितो की ते पद 'ओ३म्' हेच आहे.

(कठोपनिषद- २/१५)

दयानंदांची अमृतवाणी

राज्य कसे चालवावे ?

जो पर्यंत माणसे धार्मिक असतात, तो पर्यंतच त्यांच्या राज्याची वृद्धी होत असते पण जेंव्हा ती दुराचारी बनतात, तेंव्हा त्यांचे राज्य नष्ट भ्रष्ट होते.

महाविद्वानांना विद्यासभेचे अधिकारी बनवावे, धार्मिक विद्वानांना धर्मसभेचे अधिकारी बनवावे व प्रशंसनीय धार्मिक पुरूषांना राज्यसभेचे सभासद बनवावे. आणि त्यांमध्ये सर्वोत्तम गुणांनी, वर्णाने व स्वभावाने युक्त महान पुरूष असेल, तर त्याला राजसभेचा सभापती मानून सर्व प्रकारे सर्वांनी आपली उन्नती करावी. तीन्ही सभांच्या संमतीने राजनीतीचे उत्तम नियम करावेत आणि त्या नियमांनुसार सर्व लोकांनी वागावे. सर्वांच्या संमतीने सार्वजनिक हिताची कामे करावीत.माणसाने सर्वांचे हित करण्यासाठीपरतंत्र असावे आणि स्वत:च्या कामांच्या बाबतीत स्वतंत्र राहावे.

(सत्यार्थ प्रकाश–सहावा समुल्लास)

❀❀❀

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः आत्मकल्याणासाठी सर्वस्वाचा त्याग

त्यजेदेकं कुलस्वार्थे ग्रामार्थे कुलं त्यजेत् ।

त्यजेद् ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत् । (नीतिवचने)

अर्थः- कुटुंबाच्या (कुळाच्या) संरक्षणासाठी एखाद्या व्यक्तीचा त्याग करावा. गावाच्या रक्षणासाठी प्रसंगी एखाद्या कुळाला त्यागावे. जिल्हा किंवा राज्याच्या भल्यासाठी गावालाही सोडून द्यावे, पण जेंव्हा आपल्या आत्म्याच्या कल्याणाचा विषय येतो, तेंव्हा वरील सर्व गोष्टींबरोबरच समग्र पृथ्वीला सुद्धा त्यागावे म्हणजेच आत्महिताला सर्वात अधिक प्राधान्य देण्यात यावे.

आदि वेदमाऊली, देई सर्वभूतां सावली

(वेदमंत्रांचा प्राकृत मराठी ओवीबद्ध अनुवाद)

(ऋग्वेद प्रथम मंडळ, चौथे सूक्त, मंत्रसंख्या १०,ओवी संख्या १७)

पद्यानुवादक-संभाजीराव पवार (घटांग्रेकर)

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहसः ॥१॥

हट्ट, छल, अभिमान व जाई । परस्पर मैत्री, सत्य, प्रेम न होई ।
परोपकारार्थ तन, मन, धने न यत्न कांही । विद्योन्नति सुख नसे तोवरी ॥१॥

पुरूतमं पुरूणामीशं वार्य्याणाम् । इंद्र सोमे सचा सुते ॥२॥

(मागील मंत्रातील सखाय तुः अभिप्रागायत । येथेही या तीन शब्दांचे अर्थ घ्यावेत ।)
ईश्वर व संसारी वायू हे दोन्ही समजावेत । श्लेषालंकारे विद्वत जने
कृतकर्माचे फळ ईश्वर देतो । विद्यादि सर्व क्रियेत वायु साधक होतो ।
हा अभिप्राय जाणावा तो । इंद्र शब्दे या मंत्री ॥३॥

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम् । गमद्वाजेभिरा स नः ॥३॥

या मंत्री ही श्लेषालंकार असे । उद्योगी पुरूषासच ईश्वर सहाय्य करीतसे ।
पुरूषार्थेच विद्याधन सुख मिळतसे । वायुद्वारे या जगी ॥४॥

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः । तस्मा इंद्राय गायत ॥४॥

येथे इंद्र शब्दे परमेश्वर व सूर्य । श्लेषार्थे जाणावा हा अभिप्राय ।
ईश्वर हाच इष्ट देव होय । यानेच होई बल प्राप्ती ॥५॥
पुरूषार्थाविना न मिळे बलशक्ती । शक्ती विना शत्रु निर्बल न होती ।
यासाठी उद्योग भक्ती । सदासर्वदा करावी ॥६॥

thearyasamaj.org

सुत पाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये । सोमासो दध्याशिरः ॥५॥

कृतकर्म फलप्राप्तीसाठी । ईश्वरे रचली असे ही सृष्टी ।
ही ईश्वरी कृपादृष्टी । का न समजुन घ्यावी ? ॥ ७ ॥
पवित्र ईश्वराचे कार्य पवित्र । सूर्य व वायु ही करती पवित्र ।
मग मनुष्याने का व्हावे अपवित्र ? । दुष्कर्मे करूनीया ॥८॥
श्लेषालंकारे हा अभिप्राय जाणावा । संसारी शुभ कर्म भोग करावा ।
सर्व प्राण्यास सहयोग द्यावा । स्व-सुख व पर-सुख साधावे ॥९॥

त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः । इंद्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥६॥

विद्येने पूर्ण विकसित व्हावे । उत्तम परोपकारा साधावे ।
सर्वोत्तम सुख मिळवावे । हा ईश्वरी उपदेश असे ॥ १० ॥

आ त्वा विशन्त्वाः सोमास इंद्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥७॥

जो माणूस बने विद्वान परोपकारी । सदैव उत्तम उद्योगकारी ।
सर्व प्राणिमात्रा सुखी करी । तोच होई सदा सुखी ॥११॥
सदा पवित्र वर्ततसे । प्रशसंनीय कार्य करीतसे ।
अशासच ईश्वर आशीर्वाद देतसे । ना कदापिही इतर जना ॥१२॥

त्वां स्तोमा अवीवृधन त्वामुक्था शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥८॥

पृथ्वी सूर्यादी सर्व पदार्थ । जे विश्वामाजी वसति यथार्थ ।
ते सर्व करती सार्थ । प्रसिद्धी व जाणिव निर्मात्याची ॥१३॥
न्याय, उपकार, रक्षण गुण । ईश्वराचे असती मुख्य जाण ।
विद्वानांनीही करावे धारण । प्रवृत्ती असीच ठेवावी ॥१४॥

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिंद्रः सहस्त्रिणम् । यस्मिन् विश्वानि पौंस्या ॥९॥

ज्याच्या सत्तेने सर्व पदार्थ बलवान होती । आपआपल्या व्यवहारी दक्ष राहती ।
त्या सर्व बलादी गुणांची प्राप्ती । स्वपुरूषार्थे-ईशकृपे करावी ॥१५॥
पुरूषार्थ बळेच प्रार्थना फळे । पुरूषार्थ बळेच सर्व सुख मिळे ।
उद्योगाविना कांहीच न मिळे । हे पक्के ध्यानी धरावे ॥१६॥

मा नो मर्त्ता अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवथा वधम् ॥९॥

अंन्याये कोणा ना मारावे । मित्र भावाने वागावे ।
हे ईश्वरी कार्य जाणावे । मानावे वर्तावे ऐशापरी ॥१७॥

-मु.पो. घटांग्रा
ता. गंगाखेड जि.परभणी

thearyasamaj.org

वैदिक विवाह संस्कारातील मधाचे महत्त्व

मधुपर्क विधी - गोड जीवनाची वीथी

-पं. राजवीर शास्त्री

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्तिः सिन्धवः।
माध्वीर्णः सन्त्वौषधिः॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थीवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पर्तिर्धूमां अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
(यजुर्वेद १३/२७-२९)

उपरोक्त तिन्ही मंत्रांतून वसंत ऋतूतल्या सुखद वातावरणाचे वर्णन झाले आहे. वसंत हा ऋतूंचा राजा असून त्यांला **मधुमास** म्हणुनही ओळखले जाते. कारण या काळात हवा, पाणी, नदी, समुद्र हे मधुर रसांनी युक्त असतात. वृक्ष फुला-फळांनी लखडलेले असतात. त्यांचा सुवास चोहीकडे दरवळत असतो. पक्षी देखील आनंदाने मधुरव करीत असतात. त्याप्रमाणे माणसाने ही यज्ञ अर्थात प्रशंसित कर्म करावे व सुखी व्हावे. असा या मंत्राचा भाव आहे. एका हिंदी कवीने या भावार्थाला फार सुंदर काव्यात शब्दबद्ध केले आहे.-

चारों तरफ ही माधुरी,
ऐसा वरदान दो प्रभु।
बहती हो सुख की सुरसरी,
ऐसा वरदान दो प्रभु॥
वायु मधुर, मधुर बह
शीतल सुगंध को लिये,
दुर्गन्धियों का नाश हो...॥१॥
नदियां समुद्र ताल सब
मीठे जलों से हो भरे,
समय-समय पर वृष्टि हो....॥२॥
वृक्ष लता वनस्पति,
मीठे फलों से हो लदे,
पृथ्वी हो सस्यशामला....॥३॥
प्रातः मधुर उषा मधुर,
सायं मधुर निशा मधुर,
पृथ्वी के कण-कण में मधुरिमा ॥४॥
वाणी मधुर, हृदय मधुर,
मधुर हो सारी भावना,
फैले फिर मातृभाव भी....॥५॥

विवाहाचे वेळी वरदेवता हाती आलेल्या मधुपर्काकडे पाहून अशीच प्रार्थना करतो. प्रत्येक व्यक्ती आपल्या जीवनात गोडवा इच्छिते. कारण हे सर्व जग मधुरूप आहे. जगाचा निर्माता व नियंता मधुरूप आहे. जसे मिष्ठान्न प्रत्येकाला आवडते, तसे लाभकारी व सुखद असा गोड निसर्गही सर्वांना आवडतो. ही प्रार्थना करता-करता वरामध्येही तो भाव जागृत होतो आणि माझे जीवन सुद्धा असेच मधुपर्काप्रमाणे मधुर व्हावे, ही इच्छा तो प्रकट करतो. जीवन माधुर्यानि युक्त होण्याची प्रार्थना त्यानुसार पुरूषार्थ केल्यानेच सफल होऊ शकते. तसा प्रयत्न करणे संस्कार विधीला

thearyasamaj.org
अभिप्रेत आहे. मधुपर्क विधीच्या अगोदर आसनग्रहण विधी करतांना विनियुक्त मंत्राद्वारे वर म्हणतो- 'प्रकाशमान नक्षत्रामध्ये जसा सूर्य श्रेष्ठ आहे, तसा मी ज्ञान, बल, सदाचार व अन्य गुणांनी तुल्य पुरूषांमध्ये श्रेष्ठ आहे. जो कोणी मला निकृष्ट दाखवू किंवा बनवू इच्छितो, त्याला मी जसे आज या आसनाला पादाक्रांत केलो आहे, तसे त्यालाही पादाक्रांत करीन. अर्थात नीचता प्रदान करणाऱ्या ज्या गोष्टी उदा. दुर्व्यसने, दुराचार किंवा कामक्रोधादी शत्रू आहेत, त्यावर मी मात करीन आणि सदा श्रेष्ठत्व राखीन.'

अशी ही भावना त्यात आहे आणि ती त्याने सदैव जपली पाहिजे. त्यानंतर **ओं आ मागन यशसा....।** हा मंत्र म्हणून वर तीन वेळा आचमन करतो. तेव्हांही तो म्हणतो- 'हे जला ! तू मला चोहीबाजूंनी प्राप्त होऊन आपल्या यश, कांती व तेजाने युक्त कर. मला लोकप्रिय बनव. पशूंचा स्वामी बनव. मला निरोगी बनव.' तात्पर्य हाच की वधु-वराने या गोष्टींना सम्पादित करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. यावरून हे सिद्ध होते की मधुपर्क विधिसुद्धा उत्तम गुण, कर्म व स्वभावांनी युक्त जीवनाचे शिक्षण देते. मधुपर्क हा पदार्थ दही, मध व तुपाच्या विशिष्ट मिश्रणापासून बनतो.

मधाचे गुणधर्म :-

अ) दही :- उदरविकार दूर करतो. उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करतो. गरम, अग्निदीपक, स्निग्धत्ता, बल व वीर्यवर्धक असून वातनाशक आहे.

ब) मध :- शीतल, मधुर स्वादिष्ट, अग्निवर्धक, व्रण व कफनाशक आहे. मध फुलांच्या रसांनी युक्त आहे. त्यामुळे त्यात सुगंध, गोडवा व सरसता हे गुण आहेत.

क) तूप :- जल, कांती, तेज सौंदर्य, लावण्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा, आस्था, स्निग्धता, भक्ती, वीर्य, विज्ञान, प्रकाश हे तुपाचे अर्थ आहेत. तूप बुद्धीवर्धक असून विष व पित्त नाशक आहे.

मधुपर्क विधीतून मिळणारे संकेत -

१) या तिन्ही पदार्थांचे जे जे गुणधर्म वर्णिले आहेत, त्या त्या गुणधर्मांने आपल्या जीवनाला समृद्ध करण्याचा संकेत मिळतो.

२) ज्या पदार्थामध्ये दही, मध व तुपाचे गुणधर्म आहेत, अशाच पदार्थांचा समावेश भोजनात असावा, जेणे करून त्याच्या सेवनाने शरीरात वात-पित्त व कफ यांचे संतुलन राहील. आयुष्य बल व बुद्धी वृद्धिंगत होईल. यात अप्रत्यक्षपणे आयुष्य, बल व बुद्धी नष्ट व भ्रष्ट करणाऱ्या मास, मदिरा तंबाखूंचा व सडलेल्या, विटलेल्या दुर्गंधीत पदार्थाच्या सेवनाचा निषेधही आहे.

३) मधुपर्क जसा स्वादिष्ट आहे, तसा स्वयंपाकही स्वादिष्ट व सुपाच्य असावा.

४) शाकाहारी अन्न शुद्ध ताजे, सकस व सर्व रसांनी युक्त तर असावेच, पण ते उचित मार्गाने मिळवलेले सुद्धा असावे. त्यातील पदार्थ दुसऱ्या पदार्थाला नष्ट करून मिळवलेले नसावेत. याद्वारे अर्थशुचितेवर लक्ष केंद्रित

thearyasamaj.org

केले गेले आहे. जसे गुळ व साखर बनवायचे तर उसाला नष्ट करावे लागते. मधमाशा या फुलांना नष्ट न करता मध बनवितात. गाईला व वासराला कष्ट न देता किंवा त्यांना न संपविता दुध,दही, तुप प्राप्त होते. तसे दुसऱ्यांचे श्रम व घाम चोरून, चोरी, मांस, मदिरा विक्री व धोका देऊन वगैरे कर्माने अन्याय मार्गाने दुसऱ्यांचे नुकसान न करता धन व अन्न प्राप्त करावे, हे मधुपर्काचे महत्वपूर्ण अर्थशास्त्र आहे. अधर्म मार्गाने मिळविलेले धन सर्वच अनर्थाचे व भ्रष्टाचाराने मूळ आहे. दुःख व अशांतीचे कारण आहे. यामुळे समाजात गोडवा नांदत नाही.

जोडोनिया धन उत्तम व्यवहारे ।
उदास विचारे वेच करी । -संत तुकाराम

जीवनाला महान, श्रेष्ठ व उत्तम बनविण्यासाठी मधुवृत्ती अंगी बाळगली पाहिजे. मधमाशामध्ये श्रम, संचय, अनुशासन, मर्यादा व स्नेहभाव असतो. मधमाशा हजारो व लाखों फुलावर जातात. श्रम करतात. त्यातला रस एका मर्यादेपर्यंत घेतात. जेव्हा कांही माणसे वासराचे तोंड मारून गाई-म्हशीच्या स्तनांना रक्त येईपर्यंत पिळतात. पण मधमाशी असा अनुचित व्यवहार करीत नाही. मधमाशा आपल्या राणीमाशीच्या आज्ञेत व अनुशासनात राहतात. आणि आपसात भांडण व तंटे न करता प्रेमाने एकत्रित राहतात. अशा रीतीने भरपूर मधुसंचय करतात. अशी वृत्ती ही सर्वांनी अंगी बाळगली पाहिजे.

चरत् वै मधु विन्दति चरन् उद्‌वाम।
सूर्यस्य वरय श्रेमाणं यो न तंद्रयते
चरन् । चरैवेति..चरैवेति ॥
(ऐतरेय ब्राह्मण)

पुरूषार्थ करूनच मधमाशी मध गोळा करते. पुरूषार्थ करूनच पक्षी फळे खातात. पुरूषार्थानेच सूर्य जगाला प्रकाशित करतो आणि प्रशंसित होतो. तात्पर्य जे आपण अन्नसेवन करतो. ते स्वकष्टार्जित असायला हवे. ईमानदारीने व सत्य मार्गाने मिळविलेले असावे. शास्त्राने निषिद्ध केलेल्या मार्गाने मिळवलेले नसावे. कारण भ्रष्ट आचरणाचे मूळ भ्रष्ट आहारात आहे. **जसे खाने अन्न तसे बनते मन ।** हे मात्र खरे आहे.

६) **'मित्रस्य त्वां चक्षुषा प्रतीक्षे ।'** या मंत्रांशाचा उच्चार करीत वर मधुपर्काकडे मित्र दृष्टीने पाहतो. याचा अर्थ गृहस्थी माणसाने आपल्या पुरूषार्थाने जे मिळाले, त्याकडे पाहुन संतुष्ट राहावे व प्रसन्न व्हावे. जसे मित्राच्या दर्शनाने आपण प्रसन्न होतो. मधमाशी अनेक फुलांवर बसते. प्रत्येक फुलाचा रस गोड असेलच असे नाही. आंबट, तिखट, कटू असेही रस ती घेते आणि त्या सर्व रसांची एक गोड पोळी बनविते. मनुष्यालाही परिश्रमाने व इमानदारीने धन कमावतांना आंबड, गोड व कडू अनुभवांना सामोरे जावे लागते. त्यातून जे प्राप्त झाले, त्याला गोड मानून घेण्याची कला अवगत केली पाहिजे. हे झाले आय आणि व्यय यांच्या बाबतीत !

thearyasamaj.org
आता त्याचा भोग कसा करावा ? याचेही दिग्दर्शन मधुपर्क विधीमध्ये कसे केले गेले आहे ? ते पाहू या !

अ) मधुपर्क सेवन करण्याअगोदर वर त्याचे काळजीपूर्वक अवलोकन करतो. त्यात अनामिका व अंगुष्ठ फिरवितो. चुकून कचरा, खडा, केस असे काही पडले तर नाही ना ? हे तपासतो. तसे कांही सापडल्यास बाहेर फेकून देतो. ही काळजी प्रत्येक वेळी आपण स्वतः जेवण करतांना किंवा इतरांना अन्न खाऊ घालतांना हे भान ठेवावे, असा सावधानतेचा इशारा दिला गेला आहे.

ब) त्यानंतर वर मधुपर्क चारही दिशांकडे शिंपडतो. वरच्या दिशेलाही शिंपडतो. याचा अर्थ आहे -आपापल्या जे काही मिळालेले असते. त्यात अनेकांचा हातभार लागलेला असतो. प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अनेकांचे ऋण आपल्यावर असतात. त्याची जाणीव या प्रक्रियेमधून करून दिली आहे. ज्याचा ज्याचा अधिकार आहे, त्याला त्याचा त्याचा भाग देणे. हा गृहस्थाश्रमाचा धर्म आहे. यातच अन्न व धनाची पवित्रता सामावली आहे. गृहस्थाश्रम हा देव बनण्याचा आश्रम आहे. दिल्याशिवाय देव बनता येत नाही. तेव्हा परिजन, नोकर, चाकर, आंधळे, लंगडे, असहाय्य, दीन-हीन यांना व तसेच पशुपक्षांना देऊन जे शेष राहते, त्याला प्रसाद समजून आनंदाने त्याचे सेवन करणे गरजेचे आहे. असे न करता जो कोणी अन्न सेवन करतो, तो पापी आहे, असे शास्त्रात म्हंटले आहे. शास्त्रात अनेक ठिकाणी वाटून खाण्याचाच उपदेश खालीलप्रमाणे प्राप्त होतो.

* **तेन त्यक्तेन भुंजीथाः ।**

(त्यागपूर्वक भोग करा.)

* **केवलाघो भवति केवलादी ।**

(जो एकटाच खातो, तो पापी आहे.)

* **व्रत नेमा विना सेविजे जो अन्न तो श्वानाहुनी श्वान ।** (-संत तुकाराम)

विवाह संस्काराच्या आरंभी वरासाठी **साधू** शब्दाचा प्रयोग आला आहे. साधू कोण खरा ? असा प्रश्न हजरत इब्राहिम ने एका व्यक्तीस विचारला, त्यावर त्याने म्हंटले 'जो मिळाले तर खातो, न मिळाले तर ईश्वराची मर्जी मानून शांत राहातो, तो खरा साधू होय.' यावर इब्राहिम ने म्हटले- **'असे तर कुत्राही करतो,'** तेव्हा त्या व्यक्तीने 'तुम्हीच सांगा खरा साधू कोण ?' असे विचारले, तेव्हा हजरत इब्राहिम ने सांगितले -**'मिळाले तर वाटून खातो, न मिळाले तर ईश्वराने मला आणखी तपस्या करण्याची संधी दिली, असे मानून संतुष्ट राहतो, तो खरा साधू !'**

मधुपर्कासारख्या उत्तम पदार्थाचे एकट्यानेच भोग न करता ते इतरांनाही दिल्याने परिवार, समाज व राष्ट्रातील वातावरण मधुमय बनते. अशा व्यवहारामुळे उत्तमपदार्थांची वृद्धी होते.सर्वांना पर्याप्त अन्न मिळते. सर्वजण हृष्ट, पुष्ट व बलवान बनतात.

thearyasamaj.org

परस्पर स्नेह व सहकार्याचे नाते निर्माण होऊन आनंदी होतात. वाटून खाण्याने किंवा दान दिल्याने प्राणी वशीभूत होतात. शत्रूंचा अंत होतो. परके आपले मित्र बांधव बनतात. सर्व दोषांचा नाश होतो. जीवनाला गोडी चढते दानी माणसाचा सर्वजण आदर करतात. तो लोकप्रिय होतो. सर्वांचा आवडता बनतो आणि त्याला यश व कीर्ती प्राप्त होते. समाजातील आर्थिक विषमता दूर होऊन समाजात समानता व सलोखा निर्माण होतो. सर्वत्र माधुर्याचा संचार होतो.

भावनात्मक संदेश :-

मधुपर्काचा एक संकेत असा की पती-पत्नीचे दांपत्य जीवन प्रेममय व रसमय व्हावे. त्यांच्यात सुसंवाद घडावा. परस्परांवरचा विश्वास दृढ व्हावा. त्यांच्या डोळ्यात स्नेह व वाणी मध्ये अमृत उतरावे. सामवेद व अथर्ववेदात म्हंटले आहे -

-घृतं मे चक्षुरमृतं व आसन् ॥

-मधुमतीं वाचमुदेयम् ॥

वाणी माधुर्याने युक्त असावी. **'सत्यं वद, प्रियं वद ।'** असा नीतिकारांचा ही आदेश आहे. गोड-गोड खाण्यापेक्षाही अधिक महत्वाचे आहे गोड गोड बोलणे ! हे गोड बोलणे मधासारखे असावे. साखरेसारखे नव्हे ! या जगात मतलबी माणसे व साधु- संत दोघेही गोड बोलतात. पण त्यात मतलबी माणसाचे गोड बोलणे, हे साखरेसारखे असून ते रोग निर्माण करणारे असते आणि साधु-संतांचे गोड बोलणे हे मधाप्रमाणे असून ते रोगनिवारक असते. अतिसुखद, शान्तिप्रद, प्रिय, मधुर व हितकारी खाद्य व पेय पदार्थालाही अमृत म्हंटले जाते. याशिवाय अमृत त्यालाही म्हणतात, ज्याच्या सेवनाने मृत्यु ओढवत नाही.उलट त्यांला संजीवनी प्राप्त होते आणि अशा संजीवनी प्रदान करणाऱ्या वाणीला 'अमृतवाणी' म्हणतात. संत ज्ञानेश्वर म्हणतात-**साच आणि मवाळ ।**

मितुले आणि रसाळ

शब्द जैसे कल्लोळ । अमृताचे ॥

उपनिषदांच्या आदेशानुसार ***सत्यं वद धर्मं चर*** याचे पालन केले गेले पाहिजे. म्हणूनच १६ संस्कारांपैकी जातकर्म, अन्नप्राशन, समावर्त्तन व विवाह संस्कारामध्ये मधुपर्काचा प्रयोग केला जातो. कारण मधुर वाणी व मधुर भाषण ही एक प्रकारे कामधेनू असून ती आपल्या कामना पूर्ण करणारी आहे. मधुर बोलणारे इहलोकी व परलोकी सुख भोगतात. **जिव्हाग्रे वसते लक्ष्मी ।** ज्याच्या जिभेत गोडवा आहे, त्याच्याकडे लक्ष्मी नांदते, असेही म्हंटले आहे. ज्यांच्या जीभेवर मधाचे बोट लागलेले आहे, तो शत्रुंजयी होतो. त्याचे कोणतेही काम सरळ व सहजपणे पूर्ण होते. मधुर वाणीचे महत्व सांगावे तेवढे कमीच आहे. संत कबीर म्हणतात -

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे,आपहु शीतल होय

-आर्यसमाज, सोलापुर/९८२२९९००११

thearyasamaj.org

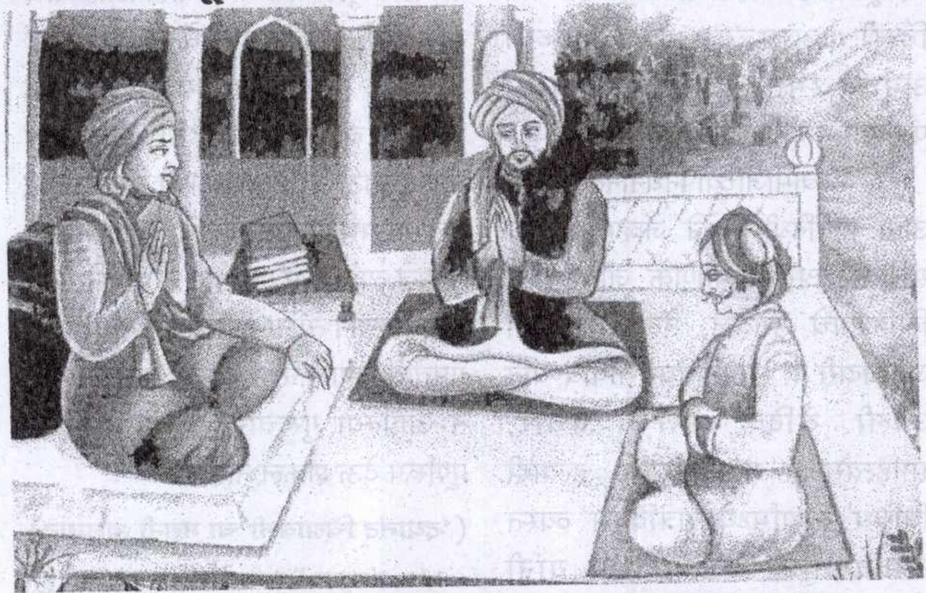

- पं. लेखरामांनी घेतले स्वामीजींचे दर्शन-

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

त्याकाळी पं.लेखराम हे पंजाब राज्यात पोलिस सार्जंट पदावर कार्यरत होते. क्रांतिकारी लेखक मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी यांच्या ग्रंथांचे वाचन केल्यामुळे त्यांना स्वामी दयानंदांचा परिचय झाला. पं. लेखराम हे त्यापूर्वी मूर्तिपूजक पौराणिक होते. नवीन वेदांताच्या सिद्धांतांवर त्यांची फार मोठी श्रद्धा होती. याच काळात ते आर्य समाजाच्या संपर्कात आले व त्यांनी पेशावर येथील आर्य समाजाचे सभासदत्व देखील स्वीकारले. या दरम्यान स्वामी दयानंद सरस्वती हे अजमेर मध्ये आल्याचे त्यांना समजले. तेव्हा लागलीच आपल्या कार्यालयातून रजा घेऊन ते अजमेर कडे निघाले. त्या काळात रेल्वे प्रवास हा फारच मंद गतीचा होता. असे असले तरी त्यांनी रेल्वे पकडली व दि. १७ मे १८८१ रोजी सकाळी ते अजमेरला पोहोचले व तेथे स्वामीजींचे दर्शन घेतले.

स्वामीजींची विशालकाय देहयष्टी, त्यांचा दिव्य तेजस्वी चेहरा आणि ब्रह्मचर्याने चमकणारे शरीर पाहून ते अतिशय प्रभावित झाले. स्वामीजींकडून त्यांनी आपल्या विविध शंकांचे समाधान करवून घेतले. स्वामीजींनी लेखरामांना २५ वर्षाअगोदर विवाह न करण्याचा सल्ला दिला. स्वामीजींनी त्यांना आठवण

thearyasamaj.org

म्हणून अष्टाध्यायी ग्रंथाची एक प्रत दिली. आपल्या गुरूवर्यांच्या अमूल्य स्मृती रूपाने या ग्रंथाचा पं लेखरामांनी जीवनभर सन्मान केला.

स्वामीजींच्या निधनानंतर पंजाब आर्य प्रतिनिधी सभेने जेव्हा महर्षीचे सविस्तर असे प्रामाणिक जीवनचरित्र लिहिण्याचे ठरविले, तेंव्हा ही मोठी जबाबदारी पं. लेखरामांवर सोपविण्यात आली. वैदिक धर्माचा प्रचार, साहित्यसृजन व शास्त्रार्थ इत्यादी विविध कार्यांमध्ये रात्रंदिवस व्यस्त असतांनासुद्धा श्री लेखराम यांनी आपल्या गुरूदेवांचे जीवनचरित्र लिहिण्याचे मोठे कार्य आपल्या हाती घेतले. लागोपाठ अनेक वर्षापर्यंत स्वामीजींच्या चरित्रासंबंधांची माहिती संकलित करण्यासाठी ते ठिकठिकाणी गेले आणि मूलभूत सामग्री गोळा केली. दुःखाची गोष्ट म्हणजे त्यांच्यावर एका दुष्ट नराधमाने खुनी हल्ला केल्याने त्यांना अवेळीच आपले प्राण गमवावे लागले. त्यांच्या या हौतात्म्यामुळे ते आपल्या गुरूचरित्र लेखन कार्याला पूर्णरूप देऊ शकले नाहीत.

(**'दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद**)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

स्वामी श्रद्धानंदजी (पू. हरिश्चंद्र गुरूजी) च्या गौरवार्थ राज्यात

चार ठिकाणी मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिबिरे

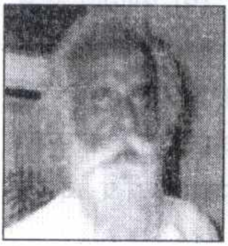

आपली मुले हीच खरी धनसंपदा होत. लहानवयात बालमनांवर आपण जे संस्कार व विचार बिंबवितो, तेच त्यांच्या आयुष्याची शिदोरी बनून जीवनभर उपयोगी पडतात म्हणूनच विद्यार्थीदशेत म्हणजेच ब्रह्मचर्य अवस्थेत या बालकांना सन्मार्ग दाखवून त्यांचा सर्वांगिण विकास साधणे व तसेच त्यांना वेदांची पवित्र शिकवण देणे आवश्यक ठरते. देशाचा बालक व युवक निर्व्यसनी, सदाचारी, मानवतावादी, राष्ट्रभक्त, संस्कतिरक्षक व सामाजिकतेची जाणिव ठेवणारा घडावा, यासाठी त्याना योग्य दिशा देणे व आत्मकल्याणास प्रवृत्त करणे. या करिता सामूहिक पाऊल उचलणे गरजेचे असते. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा या करिता कृतसंकल्प आहे.

विद्यार्थ्यांच्या नवनिर्मितीसाठी आपले समग्र जीवन वाहिलेले पूज्य स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी) यांनी मानवता संस्कार शिबिराचा प्रयोग यशस्वी करून नवा आदर्श प्रस्थापित केला आहे. त्यांच्या गौरवार्थ हा उपक्रम सभा गेल्या १५ वर्षापासून सामूहिक स्वरूपात राबवित आहे.

thearyasamaj.org

राज्यातील विविध ठिकाणच्या आर्य समाजाच्या पूर्ण सहकार्याने अशी शिबिरे प्रतिवर्षी त्या-त्या ठिकाणी आयोजित केली जातात. यावर्षी अशा प्रकारची चार शिबिरे खालीलप्रमाणे आयोजित करण्यात येत आहेत.

१) वरवटी ता. भालकी जि. बीदर (दि. २५ एप्रिल ते १ मे २०१४)
२) औराद (गुं.) ता. उमरगा (दि. २ में ते ८ मे २०१४)
३) औराद (शहा.) ता. निलंगा (दि. ९ मे १५ मे २०१४)
४) धर्माबाद जि. नांदेड (दि १७ मे ते २३ मे २०१४)

शिबिरांची वैशिष्टये -

१) ५ वी ते १० वी च्या विद्यार्थ्यांना नाममात्र रू. १००/- शुल्कासह प्रवेश
२) दिवसभराची व्यस्त दिनचर्या.
३) शिबिरार्थ्यांचा सर्वांगिण विकास
४) विद्यार्थ्यांना शिबिर संयोजकांच्या निर्देशनाखाली आठवडाभर शिस्तीत व नियमन राहणे गरजेचे आहे.

मार्गदर्शक विद्वान व प्रशिक्षक-

* श्री हरिसिंहजी आर्य (मुख्य प्रशिक्षक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल, दिल्ली)
* व्यंकटेशजी हालिंगे (आ.वी.दल अ.)
* सुधाकरजी शास्त्री (सभाउपदेशक)
* पं. प्रतापसिंहजी चौहान (भजनीक)
* डॉ. ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थी
* वैद्य विज्ञानमुनिजी वानप्रस्थी
* डॉ.देविदासरावजी नवलकेले (मुंबई)
* पं. राजवीरजी शास्त्री (सोलापुर)
* पं. तानाजी शास्त्री (परळी-वै.)
* प्रा. अरूण चव्हाण (परळी-वै.)
* पं. मारूतीरावजी घोरपडे (लातूर)

तरी सूज्ञ पालकांनी आपल्या भागात आयोजित शिबिरांमध्ये मुलांना पाठवून त्यांचा सर्वांगिण विकास साधावा.

विनीत- सभा व आयोजक आर्य समाज
प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी ९४२२६१०३१३

वार्ता विशेष — स्वास्थ्य रक्षण व चिकित्सा शिबिर यशस्वी

प्रांतीय सभेतर्फे दि. १ ते ७ मार्च दरम्यान परळी येथील गुरूकुलाश्रमात आयोजित राज्यस्तरीय '**स्वास्थ्य रक्षण व चिकित्सा प्रशिक्षण शिबिर**' यशस्वी ठरले. आर्य समाज परळी च्या सहाकार्याने हे शिबिर सभेने लंडनच्या स्व. शांतिदेवी मायर (समाजसेविका) व स्व. धर्मपालजी भसीन यांच्या स्मरणार्थ आयोजित केले होते. या शिबिरात सहभागी जवळपास २० प्रशिक्षणार्थ्यांनी योग, निसर्गोपचार व आयुर्वेद पद्धतीने असाध्य रोगांवर कायम स्वरूपी मात करण्यासाठी प्रात्यक्षिके व मार्गदर्शन पर व्याख्याने यांच्या माध्यमाने सर्वश्री वैद्य विज्ञानमुनिजी, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, माता सेवायती यांच्याकडून प्रशिक्षण घेतले.

thearyasamaj.org

सोलापुरात वक्तृत्व स्पर्धा व शुद्धी संस्कार

आर्य समाज सोलापुरच्या वतीने आर्य कार्यकर्ते श्री मल्लिनाथजी बिराजदार यांच्या गौरवार्थ शहरातील सोनामाता विद्यालयात **'शाकाहाराचे लाभ व मांसाहाराचे दुष्परिणाम'** या विषयावर वक्तृत्व स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. या स्पर्धेत यशस्वी ठरलेल्या कु. यास्मीन कय्यूम शेख (प्रथम), कु. पूजा शिवराम गट्टू (द्वितीय) व कु. मयुरी खाजप्पा भंडारे (तृतीय) या विद्यार्थिनींना गौरविण्यात आले. स्पर्धेचे परीक्षण मु.अ. सौ.कल्पना रेडेकर, सौ. सुजाता सुतार, प्रा. सुरेश बुरबुरे यांनी केले.

तसेच आर्य समाजात पं. राजवीर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली आयोजित एका शुद्धी यज्ञात ख्रिश्चन पंथ स्वीकारलेल्या सोलापुरच्या श्री बाबुराव पवार यांचे शुद्धीकरण करून त्यांना पुन्हा वैदिक धर्मात समाविष्ट केले गेले. बालाप्रसाद सोनी, भाऊसाहेब सुतार, उत्तममुनिजी, सुभाष गायकवाड, शरद होमकर, मेघराज चतुर्वेदी यांनी हा शुद्धियज्ञ यशस्वी केला.

शोक वार्ता मगर गुरूजी (योगमुनिजी) यांचे निधन

योगप्रचारक व निवृत्त शिक्षक सीताराम पंढरीनाथ मगर गुरूजी यांचे दि. ७ मार्च रोजी सायं.७ वा. वेदश्री गुरूकुल रामलिंग येडसी येथे हृदयविकाराने निधन झाले. ते ८२ वर्षांचे होते. त्यांच्या मागे दोन मुले व तीन मुली असा परिवार आहे. लातूरच्या जि.प.माध्यमिक शाळेत त्यांनी हिंदी विषयाचे अध्यापन केले. मुळचे जागजी (ता.उस्मानाबाद) येथील रहिवासी श्री मगर गेल्या कांही वर्षापासून योगप्रचाराचे कार्य करीत होते. त्यांच्यावर वैदिक पद्धतीने अंत्य संस्कार करण्यात आले.

पत्रकार जयप्रकाश माने यांचे देहावसान

लातूरचे पत्रकार, दै.राजधर्म चे संपादक व एकेकाळचे आर्य समाज चळवळीतील उत्साही कार्यकर्त्ते श्री जयप्रकाश माने यांचे ३ मार्च रोजी स. ६ वा. हृदयविकाराने आकस्मिक निधन झाले. ते ६२ वर्षांचे होते. त्याच्या पश्चात् आई, पत्नी, दोन मुले व सुना असा परिवार आहे. आर्य समाजाबरोबरच त्यांचा इतर परिवर्तनवादी चळवळींशी संबध होता. १९७२ साली त्यांनी स्वामी अग्निवेश प्रणित आर्य आंदोलन कार्यात मोठे योगदान दिले होते. त्यांचा आंतरजातीय विवाह झाला होता. त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले

वरील दोन्हीं दिवगंत आत्म्यांना महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली !

thearyasamaj.org

दिल्ली दरबारी राष्ट्रकल्याणाची चर्चा

स्वामीजींनी दिल्लीत ब्राह्मो समाजाचे सूत्रधार श्री केशवचंद्रसेन, बाबू नवीनचंद्र रॉय, सुधारणावादी मुस्लिम नेते सर सय्यद अहमदखां, बाबू हरिश्चंद्र चिंतामणी, कन्हैयालाल अलखधारी व मुंशी इंद्रमणी इत्यादी मंडळीची एक बैठक बोलावून त्यांच्याशी विस्तृतपणे विचारविनिमय केला.

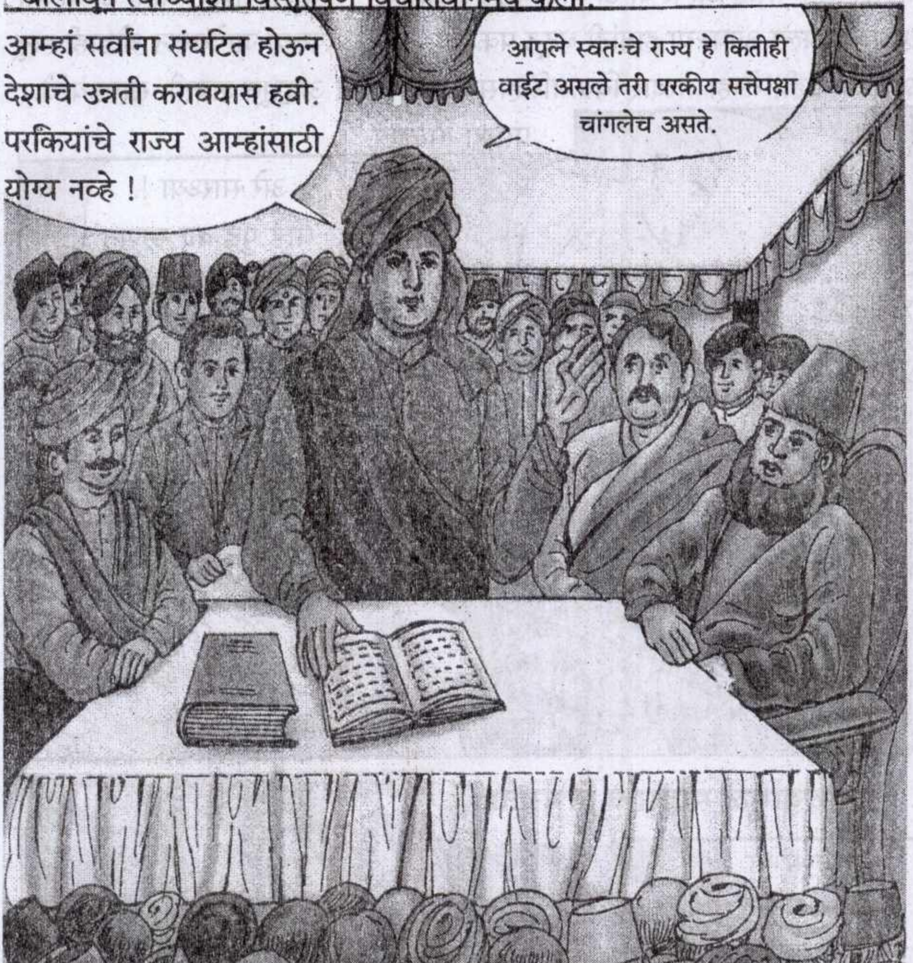

thearyasamaj.org

ब्रह्मचर्याच्या शक्तीचे प्रदर्शन

जालंधर (पंजाब) येथील एक सरदार विक्रमसिंह यांनी एकदा स्वामीजींना म्हंटले - 'महाराज ! आपण ब्रह्मचर्याद्वारे अतुलनीय बळ प्राप्तीच्या गोष्टी करता, पण याचे प्रमाण काय आहे ?' त्यावेळी स्वामीजी शांत राहिले, पण संध्याकाळी जेंव्हा सरदार विक्रमसिंह आपल्या टांग्यात बसून फिरावयास निघाले, तेव्हा त्यांनी टांग्याच्या एका चाकाला आपल्या हातांनी घट्ट पकडले. टांगा आपल्या जागेवरून थोडाही हलू शकला नाही, तेंव्हा सरदार विक्रमसिंहास ब्रह्मचर्याच्या अद्भूत शक्ती-सामर्थ्याचे प्रमाण मिळाले.

ब्रह्मचर्यामुळे साहस व निर्भयता

thearyasamaj.org

यज्ञशाला उद्घाटन समारोह, परली-वै.

समारोह में आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा के महामन्त्री एड्. प्रकाशजी आर्य। साथ में हैं डॉ.धर्मेंद्रजी शास्त्री आदि।

मुख्यातिथि डॉ.धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री(सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी) का आर्यजनों को उद्बोधन।

महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा के प्रधान स्वामीश्रद्धानन्दजी का मार्गदर्शन। मंच पर हैं आर्य भजनोपदेशक पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य,कपिलमुनिजी दिवे आदि।

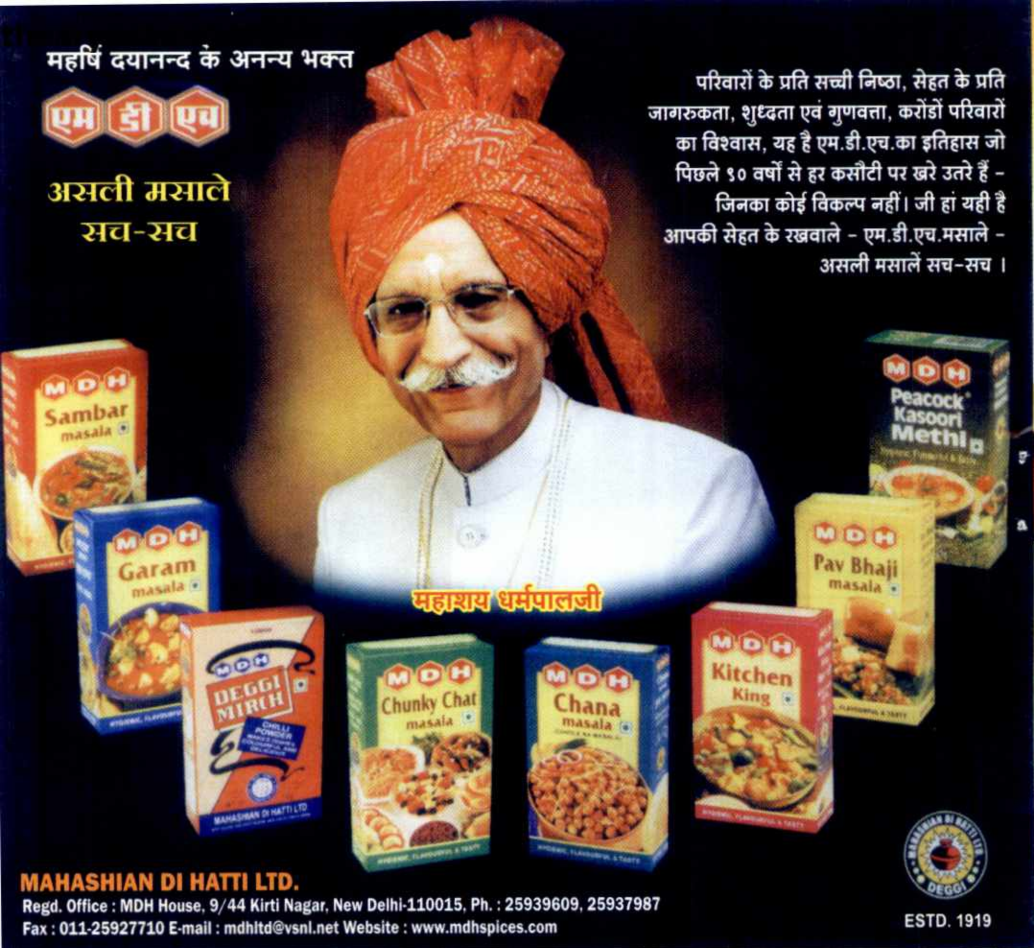

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,

श्री

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली वैजनाथ.

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट — निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दयाराम राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)